६० वर्षों से ज्ञान-विज्ञान तथा मनोविनोद को प्रकीर्ण करनेवाली विशिष्ट पत्रिका

TEST YOUR IQ
What was the original name of the Madras Observatory? Where was it shifted to in 1899?
Which is the Bird of Peace-the dove or the pigeon?
What is Lady's Slipper, if it is not any footwear?
The state of Michigan in the USA has its own state bird. Which is it?
Who qualifies to become the Prime Minister of India?
The guava and rose apple belong to one family of fruits. Which is another member of that family?
What prompted the British East India Company to consider annexing Jhansi in the 1850s?
When does the countries of the world observe International Day of Peace?
If you feel you are stumped, don't worry, you'll get all the answers in Junior Chandamama September 2006 issue. Go, grab a copy!
Junior
CHANDAMAMA
THE ONE-STOP COMPLETE FUN AND ACTIVITY MAGAZINE
NOW AVAILABLE AT YOUR NEAREST NEWS STAND FOR
RS.15 PER COPY
PAY ONLY RS.150 FOR ANNUAL SUBSCRIPTION AND SAVE RS.30
For Further Details write to :
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
82, Defence Officer's Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.
Junior
EVERYBODY LOVES PEACE
STORIES AND ACTIVITIES SPECIALLY CREATED FOR CHILDREN BELOW 9 YEARS

चन्दामामा

सम्पुट-५७ सितम्बर २००६ सञ्चिका - ९

विशेष आकर्षण

अंतरंग

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १५० रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

प्रकृति के विरुद्ध आतंकवाद

क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि प्रकृति आतंकवाद का एक दूसरा शिकार है। यदि ऐसा है तो आतंकवादी कौन हैं जो प्रकृति पर आक्रमण करते हैं। हम, मनुष्य जाति, निस्सन्देह। हम जरा स्मरण करें कि पिछले सौ दिनों में विश्व के भिन्न-भिन्न भागों में क्या हुआ: हिन्देशिया में दो भूकम्प और इनके फलस्वरूप तुरन्त सुनामी की भयंकर लहरें; उत्तर भारत और चीन में बाढ़ की विभीषिका; पूरे उत्तर में मूसलधार बारिश; हिन्देशिया में ज्वालामुखी विस्फोट; कैलिफोर्निया में तापमान में अकस्मात वृद्धि। प्रकृति प्राणियों पर अपना क्रोध क्यों उतारती है?

काफी कुछ दिनों से, लोगों ने ऐसे जलवायु सम्बन्धी परिवर्तनों के परिणामों पर विचार करना आरम्भ किया है। हमें प्रायः यह बताया गया है कि ओज़ोन की परत धरती पर एक विशालकाय छत्री की तरह काम करती है। जब ओज़ोन की परत में क्षीणता आ जाती है तब धरती पर पराबैंगनी विकिरण के ऊँचे स्तर पहुँचने लगते हैं और हमारे पर्यावरण तथा स्वास्थ्य के लिए खतरा बन जाते हैं। ओजोन की परत की क्षीणता का परिणाम होता है ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण में असन्तुलन।

अब इस बात का इससे अधिक सशक्त प्रमाण कभी नहीं मिला था कि प्रकृति को नष्ट करना कितना भयावह हो सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने इसलिए ठीक ही निश्चय किया है कि विश्व को प्रतिवर्ष १६ सितम्बर के दिन ओज़ोन परत को सुरक्षित रखने का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस मनाना चाहिये। याद रखो, धरती पर स्वस्थ जीवन ओज़ोन परत पर निर्भर करता है। मनुष्य को प्रकृति के विरुद्ध आतंकवादी गतिविधियों को तुरन्त बन्द कर देना चाहिये और सामंजस्य पूर्ण वातावरण में साथ-साथ रहना सीखना चाहिये।

सम्पादक : विश्वम

पाठकों का पन्ना

यू.एस.ए. से डा. सुधीर जोशी

चन्दामामा १९६२ से हमारे परिवार का सदस्य है। मैं स्वयं पिछले तीस बर्षों से*चन्दामामा* का पाठक और संग्रहकर्ता हूँ। अब भी पुरानी प्रतियाँ निकाल कर बार-बार पढ़ता हूँ। पुरानी 'वेताल कताएँ' और 'अरब की कहानियाँ' कितनी रोचक थीं। 'भयंकर घाटी' के पुनः शुरू होते ही हमारे सारे परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई। कृपया कहानियों को संक्षिप्त न करें। चित्रों को ज्यों का त्यों रखने का प्रयत्न करें और आकार छोटा न करें। लम्बी धाराबाहिकों में एक चित्र पूरे पन्ने पर चित्रित होता था, क्या बे चित्र पुनः देखने का सौभाग्य पाठकों को नहीं प्राप्त हो सकता? लम्बे धाराबाहिक ''शिलारथ'' और ''शिथिलालय'' पुनः प्रकाशित करने का आग्रह करता हूँ। 'अमर बाणी' भी पुनः प्रारम्भ करें।

उज्जैन से परमानंद जैन

मैं उन पाठकों में से एक हूँ, जो ५० सालों से*चन्दामामा* पढ़ते आ रहे हैं। बीच में कुछ समय तक *चन्दामामा* का प्रकाशन नहीं हो पाया, जिसकी जानकारी मुझे एक पत्रिका से मिली। मैंने ''धुन का पक्का विक्रमार्क'' पढ़ा, जिसे पढ़कर मैं अपने आँसुओं को रोक नहीं सका। पत्रिका फिर से प्रकाशित होने लगी और मैं फिर से इसे लगातार पढ़ता आ रहा हूँ। अब मैं ६२ की उम्र का हूँ। मुझे इसे पढ़ते हुए देखकर कुछ लोग आश्चर्य-भरे स्वर में पूछते रहते हैं कि इस उम्र में भी *चन्दामामा* पढ़ रहे हो? मैं उनसे कहता रहता हूँ कि इस पत्रिका को इस जन्म में ही नहीं, अगले जन्म में भी पढ़ने की इच्छा रखता हूँ और भगवान मुझे यह सुअवसर प्रदान करें, क्योंकि इसे पढ़ने से मुझे अपार ज्ञान प्राप्त होता है। मेरी बातें उन्हें विचित्र लगती हैं और बे चुपचाप लौट जाते हैं। इस पत्रिका में कुछ ऐसी मर्म भरी बातें भरी हुई होती हैं, जिन्हें पढ़कर आनंद होता है, गुदगुदी भी होती है। अपने परिवार में मैं अकेले ही इसे पढ़कर मज़ा नहीं लेता, बल्कि ३५-३८ के बीच की उम्र के मेरे लड़के-लड़कियाँ भी पढ़ते हैं और अपने बच्चों को इसमें छपी कहानियाँ सुनाते रहते हैं। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि भारत के सब बालक-बालिकाएँ इसे पढ़ें, इसका आनंद लें, इससे ज्ञान प्राप्त करें और मनोरंजन करें।

चन्दामामा, आकाश में चमकते चन्दामामा की तरह शीतल हो, मधुर हो और शाश्वत हो।

प्रसाद की दैव भक्ति

बचपन से ही प्रसाद में पौरुष की मात्रा आवश्यकता से अधिक थी। बड़े ही क्यों न हों, उसे डांटें तो वह नाराज़ हो उठता था। कोई भी उसमें ग़लती ढूँढ़ने की कोशिश करता नहीं था, जिसका कारण था, उसकी अपार दैव भक्ति।

प्रसाद हर रोज़ मंदिर जाता था। बड़ों से पूछ-पूछकर भगवान की कथाएँ सुना करता था। अपनी उम्र के लड़कों से वह बहुत कम बोलता था। दैव कार्यों में उसकी अधिक रुचि थी। गाँव में जो पुराण सुनाये जाते थे, उन्हें ध्यान से सुनता था। फ़ुरसत के समय गीता पारायण करता था। परंतु, साथ ही वह विद्याएँ भी ध्यानपूर्वक सीखता था। अठारह वर्ष की उम्र में ही उसने विद्याभ्यास पूरा कर लिया।

प्रसाद की दैवभक्ति की प्रशंसा उसके बचपन में सब करते थे। परंतु, बड़ा हो जाने तथा शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद उसकी दैव भक्ति मूढ़भक्ति में बदल गयी। इसलिए बड़े लोग उससे थोड़ा दूर ही रहते थे। प्रातःकाल ही वह पूजाओं में निमग्न हो जाता था, घर के लोगों के लिए वह पकवान बनाता था और उन्हें खाने पर मज़बूर करके तंग किया करता था।

तब तक दादा और दादी काफी बूढ़े हो चुके थे। माता-पिता भी कोई काम करने के लायक़ नहीं रह गये। उसका बड़ा भाई सूरज उससे दो साल बड़ा था। वह अकेले ही घर व खेत के काम संभाल रहा था। प्रसाद से कोई काम करने कहा जाता तो वह चिढ़ जाता था। उसका पूरा ध्यान दैव भक्ति पर ही केंद्रित था। प्रसाद के पिता इस विषय को लेकर दूसरों से एक दिन बता रहे थे। सूरज ने उसका समर्थन करते हुए कहा, ''उसमें पौरुष अधिक है। उसपर किसी की टिप्पणी उसे पसंद नहीं आती। मैं ही उसका भी काम संभालूँगा। उसको लेकर आपको चिंतित होने

भवानी प्रसाद

की कोई ज़रूरत नहीं।''

कुछ समय बाद छाया नामक लड़की से सूरज की शादी हुई। ससुराल आने के बाद कुछ समय तक छाया का व्यवहार प्रसाद से अच्छा ही रहा। किन्तु, जब उसने देखा कि प्रसाद घर की कोई जिम्मेदारी संभालने को तैयार नहीं है तो छोटे-मोटे काम उसके सुपुर्द करने लगी। प्रसाद इनकार कर देता तो वह उससे झगड़ने लगती। प्रसाद ने भाई से छाया के बारे में शिकायत की। सूरज ने उसे समझाते हुए कहा, ''छाया दिन भर घर के कामों में व्यस्त रहती है। उसकी बातों का बुरा मत मानना। समय पर खाना और अपने दैव कार्यों पर लगे रहना।'' प्रसाद को लगा कि बड़े भैया उसकी शिकायत को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। उसने घर के बड़ों से यही बात दोहरायी तो उन्होंने भी कहा, ''भाई और भाभी कामों में व्यस्त रहते हैं। वे कुछ कह भी दें तो बुरा मत मानना।''

प्रसाद ने उनसे साफ़-साफ़ बता दिया, ''आप भाभी से स्पष्ट बता दीजिये कि आगे से वह मेरे विषय में हस्तक्षेप न करे।''

छाया को जब यह मालूम हुआ, तब उसने प्रसाद से कहा, ''जब तक शरीर में ताक़त थी, तब तक तुम्हारे दादा और पिता ने कड़ी मेहनत की। तुम्हें चाहिये कि उन्होंने पसीना बहाकर जो जायदाद सौंपी, उसकी रक्षा करो, उसे और बढ़ाओ। तुम्हारे भाई भी कड़ी मेहनत कर रहे हैं और जायदाद को बनाये रखने की कोशिश में लगे हुए हैं। वह होता है पौरुष। कोई काम किये बिना, बेकार बैठे रहना पौरुष नहीं कहलाता।''

''मैं थोड़े ही बेकार बैठता हूँ। प्रह्लाद जैसा दैव भक्ति में निमग्न रहता हूँ। हिरण्यकश्यप की तरह मुझे सताना मत। भगवान तुम्हें दंड देंगे,'' उसने भाभी को सावधान किया।

''मैं भी अपने पति, ससुर, सास, उनके माता-पिता की सेवा कर रही हूँ। तुम किसी भी काम के नहीं हो, फिर भी तुम्हें खाना पकाकर खिला रही हूँ। भगवान मेरी प्रशंसा करेंगे, मुझे किसी भी हालत में दंड नहीं देंगे। सचमुच ही अगर तुम प्रह्लाद जैसे दैव भक्त हो, भगवान से प्रार्थना करना कि वह मुझे दंड दे। अगर तुम ऐसा नहीं कर सके तो अपने भाई के साथ घर की जिम्मेदारियाँ संभालना।'' भाभी ने यों चुनौती दी। प्रसाद ने यह चुनौती स्वीकार कर ली। हर

दिन जब-जब मंदिर जाता तब-तब भगवान से भाभी को दंड देने के लिए प्रार्थनाएँ करने लगा। उसके बारे में जब उसकी दादी को मालूम हुआ तो प्रसाद को फटकारते हुए उसने कहा, ''भाभी माँ के समान है। उसे दंड देने के लिए भगवान से प्रार्थना करना तुम्हारी मूर्खता है।''

''भाभी मेरे दैव कार्यों में बाधा डाल रही है। वह महापापिन है। प्रह्लाद मेरे लिए आदर्श है, जिसने अपने पापी पिता को घोर दंड दिलवाया। भगवान से तब तक प्रार्थना करता रहूँगा, जब तक वे भाभी को दंड नहीं देते।'' हठी प्रसाद ने कहा।

दादा, दादी, बड़े भैया प्रसाद की इन कड़वी बातों पर नाराज़ हो उठे और उससे कहा, ''भाभी से माफ़ी माँगो, नहीं तो घर छोड़कर इसी क्षण चले जाओ।''

''प्रह्लाद का एकमात्र शत्रु था, उसका बाप। इस घर में तो सबके सब मेरे शत्रु हैं। आपके कहे अनुसार मैं घर छोड़कर इसी क्षण चला जा रहा हूँ। जब तक आप लोग मुझे वापस आने के लिए नहीं कहेंगे, मैं इस घर में क़दम नहीं रखूँगा।'' यों कहकर वह घर से बाहर आ गया और गाँव के मंदिर के प्रांगण में बैठ गया।

मंदिर के पुजारी रामशास्त्री जब जान गये कि प्रसाद रूठकर चला आया तो उन्होंने उसे समझाते हुए कहा, ''तुमने बहुत बड़ी गलती की। क्या तुमने सुना नहीं कि माता-पिता भगवान के समान हैं। उनसे रूठना भगवान से रूठने के समान
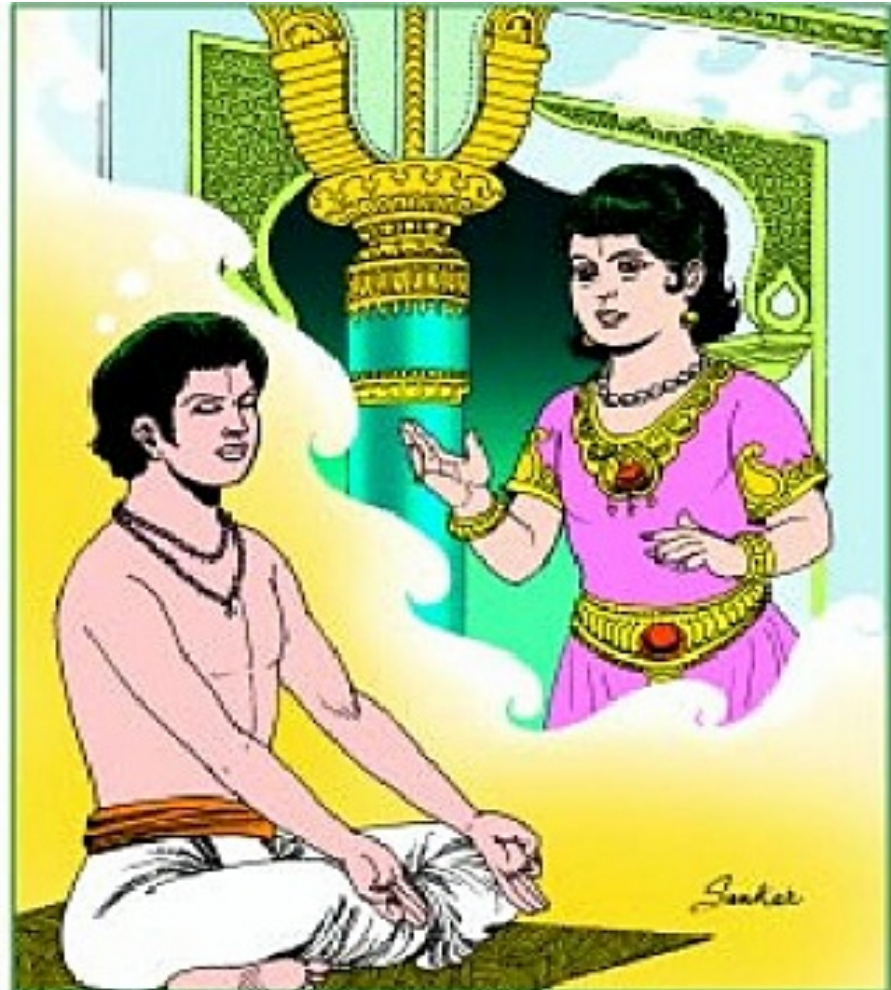
है। अभी वापस जाओ और उनसे क्षमा माँगो।''

''मैं अगर अभी वापस गया तो भगवान पर सबका विश्वास उठ जायेगा। भगवान को चाहिये कि वे मेरी भाभी को कड़ी से कड़ी सज़ा दें और मेरी भक्ति को साबित करें। तब तक मैं निरंतर दैव नाम का स्मरण करूँगा, केवल तुलसी तीर्थ पीऊँगा और मंदिर में ही रहूँगा'', प्रसाद ने कहा।

रामशास्त्री मौन रह गये। प्रसाद ने तीन दिनों तक खाना नहीं खाया, पानी नहीं पिया, केवल तुलसी तीर्थ लेता रहा। भगवान ही के ध्यान में मग्न रहा। इस वजह से वह कमज़ोर हो गया।

तीसरे दिन शाम को जब वह दैव ध्यान में मग्न था, उसने सपने में बैकुंठ में बैठे बाल प्रह्लाद को देखा। उसने प्रह्लाद से कहा, ''देखो मेरी दुस्थिति। उस समय, आपके पिता हिरण्यकश्यप

आपके एकमात्र शत्रु थे। पर, आज मेरे घर में हर कोई मेरी दैवभक्ति में अड़चन डाल रहा है। आप मेरे आदर्श हैं, मेरी भाभी को दंड दिलवाने में आप को मेरी सहायता करनी होगी।''

प्रह्लाद ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मित्र, जानते हो, तुम क्या कह रहे हो? मेरे पिताश्री ने मुझसे द्वेष किया? कदापि नहीं। उन्होंने द्वेष किया तो अपने शत्रु विष्णु से। मुझे नाना प्रकार के कष्ट पहुँचाये, केवल शत्रु द्वेष के कारण, क्योंकि मैं उनके शत्रु की शरण में गया। मनुष्य जन्म जो लेते हैं, उनके कुछ कर्तव्य होते हैं, जिन्हें उन्हें निभाना है। उनके प्रति लापरवाह होकर, बड़ों को कष्ट पहुँचाना, उन्हीं से द्वेष करना उचित नहीं। जिस भाभी ने तुम्हें अपना कर्तव्य निभाने के लिए कहा, मार्गदर्शन दिया, उन्हीं को दंड देने के लिए कह रहे हो? यह धर्म नहीं कहलाता। मानता हूँ, तुमने मुझे अपना आदर्श माना, परंतु अपनी भक्ति के द्वारा तुम उन्हें ठेस पहुँचा रहे हो। भक्ति प्रेम का आह्वान करती है, द्वेष का नहीं। मूढ़ भक्ति, मूढ़ आचार कष्ट पहुँचाते हैं। मेरी बातों पर गंभीरता के साथ चिंतन करो। जैसे ही तुममें परिवर्तन आयेगा, तुम्हारे लोग तुम्हें घर वापस ले जायेंगे।'' मधुर स्वर में प्रह्लाद ने कहा।

''मैं जान गया कि मूढ़ भक्ति कितनी कष्टदायक है, अहंभाव में आकर बड़ों का निरादर करना पाप है। मेरी आँखें खोल दीं आपने। आपका कृतज्ञ हूँ।'' प्रसाद ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

''प्रसाद, तुम्हें ढूंढ़ते कोई आये हैं।'' पुजारी ने उसके मुँह पर पानी छिड़कते कहा।

प्रसाद चौंककर उठ बैठा। उसकी समझ में नहीं आया कि यह सपना था अथवा सच। सामने बड़े भैया और भाभी खड़े थे। उन्होंने कहा, ''बिना कुछ खाये-पिये कितने दिनों तक यहीं पड़े रहोगे? चलो, घर चलते हैं!'' प्यार से सूरज ने कहा।

''भाभी, मुझे क्षमा कर देना,'' कहते हुए वह उठा और उसके पैरों पर गिर गया। ''दैवभक्ति का सच्चा अर्थ अब स्वयं अपने आदर्श प्रह्लाद से मैंने जान लिया है।'' उसमें हुए परिवर्तन को देख सब लोग बेहद खुश हुए।

गाय-बछड़ा

राघव और नारायण के घर अगल-बग़ल में ही थे। उनके खेत भी एक-दूसरे के खेतों से सटे हुए थे। उन दोनों के घर के बीच में कोई दीवार भी नहीं थी। राघव की पत्नी कांता और ना रायण की पत्नी शांता भगवान में अत्यधिक विश्वास रखती थीं। दो-दो बैल थे, भैंसें थीं, पर दोनों के यहाँ गायें नहीं थीं। पत्नियों की इच्छा पूरी करने के उद्देश्य से दोनों हाट गये और एक-एक गाय खरीदी। कांता और शांता इसपर खुश हुईं, क्योंकि अब वे गो पूजा कर सकती हैं। बड़ी ही श्रद्धा के साथ वे उनका पालन-पोषण करने लगीं।

नारायण की गाय ने लगातार दो बछड़ों को जन्म दिया तो राघव की गाय ने दोनों बार बछियों को ही जन्म दिया। राघव की उम्मीद थी कि बछड़ा हो जाए तो वह खेत के काम में उपयोग में आयेगा। अब दोनों गायें तीसरी बार गाभिन थीं। राघव की बड़ी इच्छा थी कि इस बार ही सही उसकी गाय बछड़े को जन्म दे। रिश्तेदारों के यहाँ विवाह होनेवाला था, इसलिए नाराय ण को दूसरा गाँव जाना पड़ा। निकलने के पहले उसने राघव को गाय की देखभाल की जिम्मेदारी सौंपी और सपरिवार विवाह में भाग लेने चला गया।

राघव के मन में एक विचित्र विचार उत्पन्न हुआ। उसने सोचा कि दोनों गायें उस रात को व्यायें तो बहुत अच्छा होगा। उसके बाद क्या करना है, उसके बारे में बड़े ही उत्साह के साथ पत्नी से भी बताया। उसकी बातें सुनकर शांता स्तंभित रह गयी। उसने पति को फटकारते हुए कहा, ''आख़िर आपको हो क्या गया है? उनकी गाय बछड़ा देगी तो हम उसे ले आयें? हमारी गाय बछिया जन्मेगी तो उसे उनकी गाय के पस छोड़ दें? यह तो सरासर अन्याय है। पशु अपनी संतान को मनुष्यों से भी अधिक साव धानी से देखभाल करते हैं। आपने कुत्ता, बिल्ली, बंदर आदि को देखा होगा। वे कितने प्यार से अपनी संतान की देखभाल करती हैं। जैसा आप चाहते

राम गोपाल

हैं, उसके अनुसार यदि हम बछड़ों की अदला-बदली करेंगे भी तो गाय रस्सी तोड़ डालेगी और अपने बछड़े के पास चली जायेगी।'' उसने पति को सावधान करते हुए कहा।

राघव ने उसकी बातों की परवाह नहीं की। उसकी उम्मीद के मुताबिक ही दोनों गायों ने बछड़ा और बछिया को जन्म दिया। नारायण की गाय ने बछड़े को जन्म दिया तो राघव की गाय ने बछिया को। शांता ने पति को बहुत रोका, पर राघव ने अपने विचार के अनुसार ही बछड़ों की अदला-बदली कर दी। फिर वह सो गया।

थोड़ी देर बाद पशुओं की झोंपड़ी में आहट हुई तो राघव व शांता वहाँ गये। उन्होंने देखा कि उसकी गाय अपनी बछिया को चाट रही है। उसके गले की रस्सी टूटी हुई है। वह फ़ौरन नारायण की झोंपड़ी में गया तो देखा कि उसकी गाय अपने बछड़े को चाट रही है। अब उसकी समझ में आ गया कि पशु अपनी संतान को कितना चाहते हैं। वह मान गया कि उसकी पत्नी की बातों में कितनी सच्चाई है। अपने किये पर उसे पछतावा हुआ। राघव गाय और बछड़े को नारायण के पशुओं की झोंपड़ी में छोड़ आया और अपनी गाय और बछिया को अपने यहाँ।

नारायण और उसकी पत्नी शांता दूसरे दिन गाँव से लौटे। उन दोनों ने राघव दंपति को उनकी सहायता के लिए धन्यवाद दिया।

रात को जो घटना हुई, उसपर पछतावा प्रकट करते हुए राघव ने नारायण से कहा, ''मुझमें यह दुर्बुद्धि जगी, इसके लिए मुझे माफ़ कर देना।''

''क्या कह रहे हो राघव। इसमें दुर्बुद्धि की क्या बात है? तीन बछड़ों को रखकर मैं करूँगा भी क्या? उनमें से एक को ले लेना।''

''नारायण, तुम्हारा हृदय बड़ा विशाल है। लेकिन, मेरी बछियों में से तुम्हें एक लेनी होगी।'' राघव ने ज़ोर देते हुए कहा। नारायण ने मान लिया।

दूर खड़ी कांता और शांता उन दोनों की बातें ग़ौर से सुन रही थीं। दोनों बड़े ही प्यार से एक-दूसरे के गले लगीं।

भयंकर घाटी

13

(केशव और जयमल्ल और बूढ़ा जिस दिन गुफ़ा छोड़कर निकले थे, उसी दिन ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक दो अंगरक्षकों के साथ विन्ध्याचल की ओर निकल पड़ा। केशव आदि अन्धेरा होते होते एक गाँव में पहुँचे। उन्हें मालूम हुआ कि ब्राह्मदण्डी भी उसी गाँव में आ रहा है। वे भाग चले। बाद में...)

केशव के बूढ़े पिता ने रास्ता दिखाया। उसने कहा, ''हमें अब एक क्षण भी इस गाँव में नहीं ठहरना चाहिये। चाहे ब्राह्मदण्डी हम सबको इस वेश में न पहचाने, फिर भी उसके सामने आने से बचना चाहिये। न जाने कोई नया बखेड़ा खड़ा हो जाये। उस कम्बख्त को भी आज ही और इसी गाँव में आना था। चलो, कोई बात नहीं। हम अपना मार्ग बदल देंगे। पहले हमें शीघ्रातिशीघ्र इस गाँव से बाहर निकल जाना चाहिये और रातोंरात किसी दूसरे मार्ग से जल्दी ही भयंकर घाटी पहुँचना चाहिये।'' वे सब जल्दी ही गाँव पार करके जंगल में घुसे। तब तक काफ़ी अन्धकार हो चुका था। अन्धेरे में कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ा। इसलिए वे झाड़ियों को हटाते हुए आगे बढ़ने लगे। जंगल पक्षियों के कलरव, जन्तुओं के कोलाहल, चीत्कार आदि से गूँज रहा था। कुछ छोटे-छोटे जानवर एक झाड़ी से निकल कर दौड़ते हुए दूसरी झाड़ी में घुस रहे थे। अन्धेरे में बड़े-बड़े

रहना होगा, हमें हर काम बड़ी सावधानी से करना होगा। यह भी न जाने कैसा संयोग हुआ कि हम और ब्राह्मदण्डी एक साथ ही निकले। राजगुरु की चाल तो समझ ही गये होगे? सुना है यह उसके पैर का फोड़ा ठीक करने के लिए विन्ध्याचल से जड़ी बूटी लाने निकला है। क्या यही सच है या इसके पीछे कुछ और रहस्य है? ब्राह्मदण्डी वैद्य तो है नहीं! जड़ी-बूटी के लिए किसी वैद्य को भेज सकता था। राजगुरु ने ब्राह्मदण्डी से भयंकर घाटी के खजाने के बारे में जान लिया होगा और वही लाने के लिए अपने सैनिकों के साथ उसे भयंकर घाटी में जाने के लिए भेजा होगा। हमारे शत्रु हम से भी अधिक चालाक मालूम होते हैं।'' जयमल्ल ने कहा।

बूढ़े ने ''हाँ'' कहते हुए सिर हिलाया, फिर झट उठकर पूछा, ''कहीं यहीं आसपास घोड़े के हिनहिनाने की आवाज सुनाई दी?''

अभी केशव और जयमल्ल जवाब भी न दे पाये थे कि घोड़े का हिनहिनाना और शोर सुनाई दिया। तीनों आश्चर्य से एक दूसरे का मुख देखने लगे। अचानक बूढ़े की आँखों में चमक आ गई। वह मुस्कुराया। ''ठहरो, यदि हम एक काम करें तो हमारी मुश्किल आसान हो जायेगी।

''ब्राह्मदण्डी और उसके अनुचर इसी तरफ़ आते मालूम होते हैं। यदि हमें अपने कष्ट दूर कर इस राज्य से बाहर निकलना है, तो हमें उनके घोड़ों को लेकर भाग जाना चाहिये।'' बूढ़े ने सोचते हुए कहा। ''क्या? क्या यह सब उतना आसान है बाबा?'' केशव ने पूछा।

वृक्ष दैत्यों की तरह खड़े थे। वहाँ का दृश्य बड़ा डरावना था। तीनों हताश-से हो एक पेड़ के नीचे जा बैठे। ''क्या इस वेश में हमें ब्राह्मदण्डी पहिचान सकेगा?'' केशव ने जयमल्ल से पूछा।

जयमल्ल ने सिर हिलाते हुए कहा, ''कह नहीं सकते। पर हमने एकगलती की है, गुरु मौनानन्द ने चबूतरे के पास इस तरह बातचीत की कि सब सुन सकें। यदि वह ऐसा न करता, तो शायद बहुत अच्छा होता।''

''इसमें गलती क्या है? इस देश पर्यटन में मैंने पहले ही कहा था कि शिष्यों से ही बातचीत करूँगा।'' बूढ़े ने साफ़ साफ़ कहा।

''हाँ, परंतु किसी ने तुम्हारा बातचीत करने का तरीका पहचान लिया तो? हमें ब्रह्मापुर राज्य की सीमाओं से बाहर निकलने तक बड़ा सावधान

‘‘यह देखो, मुझे उस तरह बुलाना छोड़ दो, नहीं याद है? मैं तुम्हारा गुरु हूँ। तुम कनिष्ठ हो और जयमल्ल ज्येष्ठ है, हम जब एकान्त में हों, तब भी हमें इसी तरह पुकारना चाहिये। खैर, यदि तुम हाँ कहो, तो मैं ब्राह्मदण्डी का घोड़ा एक क्षण में ला सकता हूँ। यदि तुम उसके अनुचरों के घोड़े ले सके, तो हम सबेरे होते होते ब्रह्मापुर की सीमाएं पार कर सकते हैं। तब कोई डर न रहेगा।'' बूढ़े ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

उसकी बातें सुनकर जयमल्ल ने हँसकर कहा, ‘‘तुम्हारी क्या चाल है? मान्त्रिक का घोड़ा कैसे ले सकोगे? क्या तुम उसका तलवार से मुकाबला करोगे?''

‘‘आमने-सामने खड़े हो इस अन्धेरे में उनका मुकाबला करना अक्लमन्दी नहीं है। हमारा शोर सुन यदि गाँववाले भागे-भागे आये, तो हम पकड़े जायेंगे। बिना शोर शराबे के घोड़ों पर से उनको हटाना होगा। मैं पेड़ पर से ब्राह्मदण्डी पर रस्सी का फन्दा डालूँगा, नीचे गिरा दूँगा, फिर उसका घोड़ा ले लूँगा।'' बूढ़े ने कहा।

‘‘यदि तुम इस उम्र में इतना साहस कर सकते हो, तो क्या हम ही पीछे रहेंगे? क्यों केशव?'' कहता-कहता जयमल्ल उठा।

‘‘केशव नहीं कनिष्ठ, याद रखो।'' बूढ़ा ज़रा गरमाया। तीनों वहाँ से निकल कर उस तरफ़ चले, जिस तरफ़ से घोड़े आ रहे थे।

इस बीच ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक अपने दोनों अंगरक्षकों के साथ गाँव की ओर आ रहा था। उसके आगे पीछे अंगरक्षक घोड़ों पर सवार थे।

ब्राह्मदण्डी को घोड़े की सवारी की आदत न थी। क्योंकि पैदल जाना सम्भव न था, इसलिए घोड़े पर सवारी करने के लिए वह मान गया था। अन्धेरा था, घना जंगल था, क्रूर जन्तुओं का चीखना, चिल्लाना, उसमें डर पैदा कर रहा था। वह वातावरण उसके लिए बड़ा भयंकर था। इससे भी अधिक उसे केशव तथा जयमल्ल का भय था। वे लोग भी भयंकर घाटी की ओर जा रहे होंगे। वे किसी भी समय उसके लिए खतरा बन सकते हैं। वह सोच रहा था।

‘‘कल से हमें रात में चलना छोड़ देना होगा। सूर्योदय के साथ निकल पड़ेंगे और सूर्यास्त के साथ रुक जायेंगे। जयमल्ल, केशव और उसका पिता बड़े दुष्ट हैं। वे अन्धेरे में हम पर हमला कर

सकते हैं। तुम जानते ही हो, उन्होंने उन पहरेदारों का क्या किया था, जो मेरी गुफ़ा का पहरा दे रहे थे।'' ब्राह्मदण्डी ने कहा।

जितबर्मा और शक्तिबर्मा तो उस जंगल में, उस अन्धकार में पहले ही डर रहे थे, ये बातें सुनकर वे और डरे।

उन्होंने घोड़ों को एड़ मारते हुए कहा, ''ब्राह्मदण्डी, तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है, वैसा ही करेंगे। कौन-सा गाँव हमें पहुँचना है? अब तक क्यों नहीं आया है वह?'' उन्होंने अन्धेरे में इधर-उधर देखते हुए कहा।

ब्राह्मदण्डी उनका कोई जवाब देने ही वाला था, कि इतने में वह जोर से चीखा, ''मरा। धोखा। मेरी पीठ पर कोई फन्दा पड़ा है। बचाओ।''

''गलत! जो फन्दा सिर पर पड़ना चाहिये था, वह पीठ पर जा गिरा।'' उसे किसी का कहना पेड़ पर से सुनाई दिया। उसी समय जितबर्मा और शक्तिबर्मा ''अजीब जानवर, जानवर'' चिल्लाते-चिल्लाते घोड़ों पर से गिर पड़े।

यह सब चुटकी भर में हो गया। ब्राह्मदण्डी पेड़ की टहनी से लटक रहा था। ऊपर से उसके घोड़े पर बूढ़ा कूदा। केशव और जयमल्ल एक छलाँग में जितबर्मा और शक्तिबर्मा के घोड़ों पर जा बैठे।

''ज्येष्ठ, कनिष्ठ, आओ,'' कहते हुए उस बूढ़े ने अपना घोड़ा जंगल में दौड़ाया।

तब तक ब्राह्मदण्डी का कुछ-कुछ धीरज बन्ध गया था, उसने पीठ में बन्धी रस्सी को इधर उधर खींचते हुए कहा, ''जित, शक्ति, कहाँ हो? तुमने विचित्र जन्तुओं को देखा था? तो हो न हो वे केशव, जयमल्ल और बूढ़ेही हैं। केवल जयमल्ल ही वह विद्या जानता है। उनका पीछा करो, पकड़ो, उन्हें मारो, काटो।'' वह चिल्लाया।

जितबर्मा और शक्तिबर्मा का, ये बातें सुनकर कुछ ढाढ़स बँधा। वे खड़े हुए, म्यानों में से तलवार निकाल रहे थे कि ब्राह्मदण्डी ने रोनी-सी आवाज में कहा, ''जित, शक्ति, ज़रा ठहरो तो, पहले इधर आओ, मुझे इस टहनी से नीचे उतारो।''

जितबर्मा और शक्तिबर्मा उसके पास गये, ब्राह्मदण्डी की कमर में बँधी रस्सी को तलवार से काटा। वह नीचे गिरने ही वाला था कि उसको बीच में पकड़कर खड़ा कर दिया।

गाँव के बाहर जो थोड़ा बहुत शोर हुआ था,

वह गाँववालों ने भी सुना। वे मशाल और लाठियाँ लेकर वहाँ आये। जब उन्होंने ब्राह्मदण्डी और उसके अंगरक्षकों को उस हालत में देखा, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही।

"अरे, क्या यों देख रहे हो, क्या तुम्हारी अक्ल मारी गई है?" ब्राह्मदण्डी उन पर गरज़ा। "हम राजा के भेजे हुए राज-कर्मचारी हैं। तीन राजद्रोही हमारे घोड़े लेकर उस तरफ़ भाग गये हैं। उन्हें पकड़ लो, पकड़नेवाले को आधा राज्य मिलेगा।" उसने दाँत कटकटाये।

ग्रामवासियों में से कुछ साहसी युवक उस तरफ़ भागे, जिस तरफ़ ब्राह्मदण्डी ने अंगुली दिखाई थी। वे ही ब्राह्मदण्डी और उसके अनुचरों को बहुत आदर सम्मान के साथ गाँव में ले गये।

जयमल्ल, केशव और उसका बूढ़ा पिता घोड़ों पर सवार हो चले जा रहे थे। पर चूँकि अन्धेरा था, रास्ते में टहनियाँ थीं, काँटे वगैरह थे, इसलिए वे जितना तेज़ जाना चाहते थे, उतना तेज न जा सके। इतने में उनको पीछे से मशालें और लाठियाँ लेकर आते हुए ग्राम युवक दिखाई दिये।

"हम अच्छी आफ़त में फँसे।" जयमल्ल ने पीछे की ओर से आते हुए युवकों को देखकर कहा।

"आफ़त में फँसना क्या हमारे लिए कोई नई बात है? यह न पहिली बार है न अन्तिम बार ही। लेकिन हिम्मत न हारो। डरने से खतरा और बढ़ जायेगा। बहादुर की तरह खतरे का सामना करो।" बूढ़े ने खीझकर कहा, "उधर देखो, दीये की

रोशनी-सी दिखाई देती है। क्या तुम देख सकते हो? शायद वह जंगल में रहनेवाले किसी गड़रिये की झोंपड़ी होगी। चलो हम सीधे उस ओर चलें, देखें वहाँ छुपने की कोई गुँजाइश है कि नहीं? अगर घोड़े छोड़ने ही पड़ें तो छोड़ देंगे।''

जल्दी ही वे तीनों उस रोशनी की ओर घोड़े दौड़ाने लगे। तभी पेड़ के पीछे से दो आवाजें आईं-''कौन आ रहा है? ठहरो।''

यह सुनते ही बूढ़े ने घोड़े पर से उतर कर कहा, ''आप कौन हैं, हम नहीं जानते, हम यात्री हैं। हमें लूटने के लिए डाकू हमारा पीछा कर रहे हैं, इसलिए हम यहाँ भागे भागे आये हैं। उनकी मशालें, लाठियाँ वगैरह, आपने देखी ही होंगी।''

बूढ़े ने अभी बात खत्म न की थी कि दीया बुझ गया। एक हट्टा कट्टा लम्बा चौड़ा जंगली भाला पकड़े वहाँ भागा भागा आया। उसने केशव और जयमल्ल को देखकर पूछा, ''क्या तुम नीचेवाले गाँव की ओर से आ रहे हो? उस गाँव में आधों का काम दूसरों को लूटना है और बाकी का विनोद के लिए दूसरों का सिर काटना पेशा है। तुम न डरो, तुम्हें बचाना मेरी जिम्मेवारी है।'' फिर उसने एक तरफ़ मुड़कर कहा, ''हे, उन मशालवालों पर बाण छोड़ो, वे एक कदम भी न आगे बढ़ पायें।''

वह प्रान्त, जो तब तक प्रशान्त था, शोर शराबे से गूँजने लगा। जँगली युवक ग्राम युवकों पर पेड़ों पर से निशाना लगा लगाकर बाण छोड़ने लगे। देखते देखते वह प्रदेश युद्धभूमि बन गया। ग्राम युवक इस आशा में कि आधा राज्य मिलेगा और जंगली युवक अपने नेता की आज्ञा पालन करने के उत्साह में जोर शोर से लड़ने लगे। उन ग्राम युवकों का, जो बाणों से बचकर आ गये थे, जंगली युवक लाठियों से मुकाबला करने लगे।

एक क्षण जंगलियों केनेता ने वह दृश्य देखकर सिर हिलाते हुए कहा, ''ये दुष्ट हमारे लोगों का हमला न रोक सकेंगे, यह मैं जानता हूँ। फिर भी इस रात के समय यह जगह ठीक नहीं है। तुम्हें बचाना मेरी जिम्मेवारी है, इसलिए मैं तुम्हें एक गुप्त प्रदेश में भेज दूँगा, आओ।'' जयमल्ल, केशव और बूढ़ा उसके पीछे-पीछे घोड़ों की लगाम पकड़े चलने लगे। ***(अभी है)***
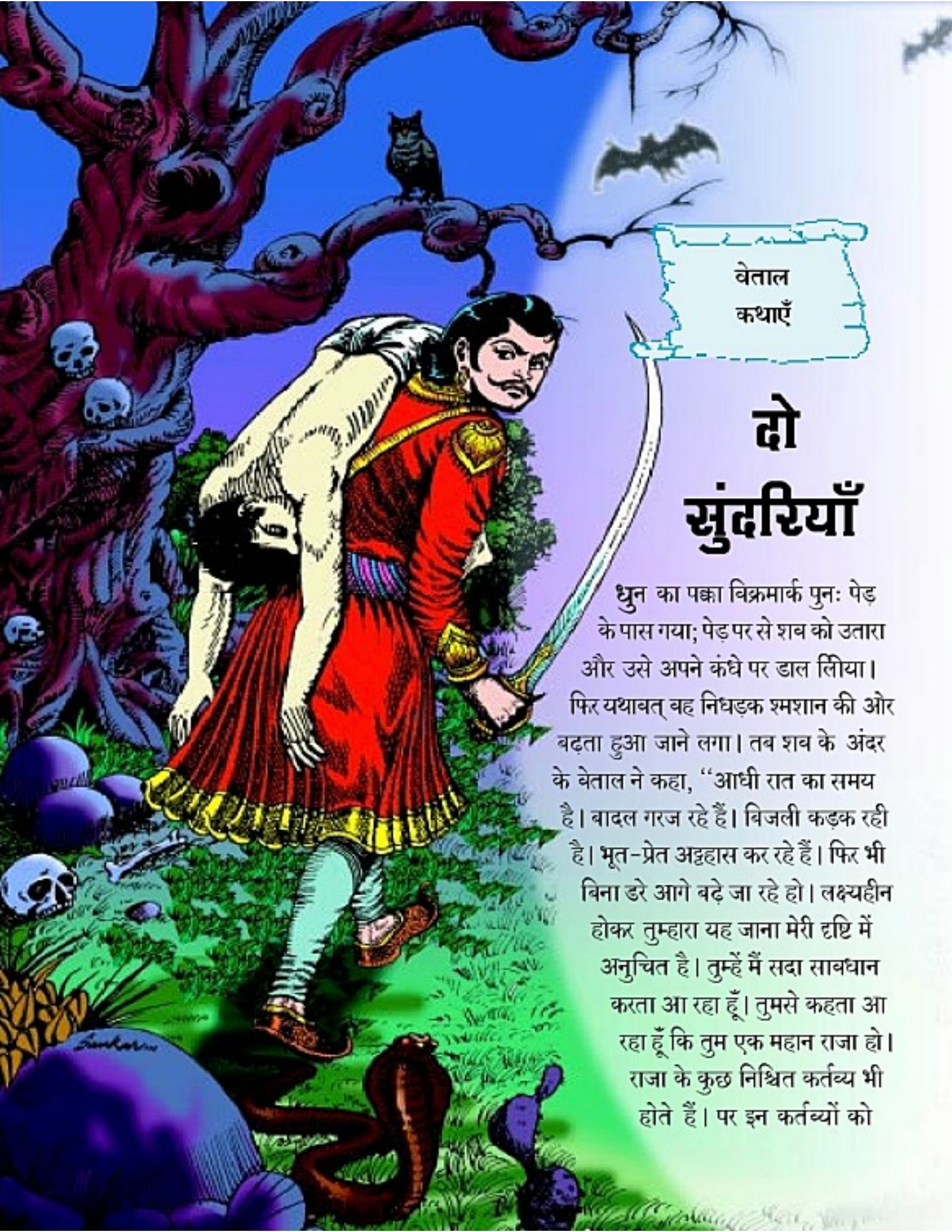
बेताल कथाएँ

दो सुंदरियाँ

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लीया। फिर यथावत् वह निधड़क श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, "आधी रात का समय है। बादल गरज रहे हैं। बिजली कड़क रही है। भूत-प्रेत अट्टहास कर रहे हैं। फिर भी बिना डरे आगे बढ़े जा रहे हो। लक्ष्यहीन होकर तुम्हारा यह जाना मेरी दृष्टि में अनुचित है। तुम्हें मैं सदा सावधान करता आ रहा हूँ। तुमसे कहता आ रहा हूँ कि तुम एक महान राजा हो। राजा के कुछ निश्चित कर्तव्य भी होते हैं। पर इन कर्तव्यों को

भुलाकर तुम भटक रहे हो। यह कदापि तुम्हें शोभा नहीं देता। समझ लो, तुमने कार्य साध भी लिया हो तो इसका क्या भरोसा कि इसका फल तुम चखोगे। मेरी आशंका है कि वह फल तुम किसी के सुपुर्द कर दोगे और फिर से खाली हाथ लौटोगे। तुम्हें सावधान करने के लिए मैं तु म्हें युवराज जयंत की कहानी सुनाऊँगा, जिसने फल तोपाया, पर उसे मानसिक चंचलता के बश होकर खो दिया, हाथ से फिसल जाने दिया। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे साथ भी ऐसा हो।'' फिर बेताल जयंत की कहानी यों सुनाने लगाः

चंद्रगिरि का महाराज बालिग़ हो गया। उसके विवाह की उम्र हो गयी। उसकी तीव्र इच्छा थी कि वह ऐसी कन्या से शादी करे, जिसे वह चाहता है। उसके माता-पिता ने कितने ही रिश्ते सुझाये, पर उसने सबसे इनकार कर किया। जयंत एक दिन शाम को टहलने के बाद जब घर लौटा, तब उसकी माँ ने उसे एक सुंदर कन्या का चित्र दिखाते हुए कहा, ''यह प्रतापगढ़ की राजकुमारी है। वह राजा की इकलौती पुत्री है। मेरी भाभी के मायके के लोगों को यह कन्या बहुत अच्छी लगी है। उनका मानना है कि यह सब प्रकार से तुम्हारे लिए योग्य पत्नी है।''

जयंत ने उस चित्र को ठीक तरह से बिना देखे ही कह दिया, ''यह कन्या मुझे बिलकुल अच्छी नहीं लगी।'' यों कहकर वह वहाँ से चलता बना।

उस रात को जयंत बहुत देर तक सो नहीं पाया। उसे लगा कि राजभवन में ही रहूँ तो मनपसंद कन्या को चुनना असंभव है। अच्छा यही होगा कि राज्य भर में घूमूँ और सुंदर व योग्य कन्या को चुनूँ। यह सोचकर बनकर वह उसी समय घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ा।

सूर्योदय होते-होते, वह एक घने जंगल के पहाड़ी क्षेत्र में पहुँचा। वहाँ पर्वत पर से एक मनोहर प्रपात नीचे के पत्थरों पर गिर रहा था। उस प्रपात से थोड़ी दूरी पर एक सुंदर कुटीर था। घोड़े से उतरकर वह उसी कुटीर की ओर गया।

उस कुटीर के आगे तरह-तरह के रंगबिरंगे पुष्पों के बीच में दो सुंदर कन्याएँ घूम रही थीं और पुष्प तोड़ रही थीं। जयंत ने आज तक ऐसी अपूर्व सुंदरियों को देखा नहीं था। उसने सोचा भी नहीं था कि ऐसी सुंदर कन्याएँ धरती पर हो भी सकती हैं।

जयंत उनके पास गया और बोला, '' आप दोनों अपूर्व सुंदरियाँ हैं। परंतु, मैं क्या जान सकता हूँ, आप इस जंगल में क्यों रहती हैं?''

जयंत को देखकर पहले वे दोनों थोड़ी घबरायीं, पर अपने को संभालते हुए उन्होंने कहा, ''कोई यह बता नहीं सकता कि सौंदर्य का क्या अर्थ होता है। सौंदर्य देखनेवालों के नयनों में होता है। हमारे पिताश्री महान ज्योतिषी हैं। उनका मानना है और उनका विश्वास भी है कि ऐसे सुंदर कुटीर में, ऐसे मनोहर वातावरण में, एक साल भर के लिए रह जाएँ तो हमारा भविष्य उज्ज्वल और सुनहरा होगा। इसीलिए उन्होंने हमारे निवास के लिए यह स्थान चुना। एक सामंत राजा के निमंत्रण पर वे कल उनके राज्य में गये हैं।''

वे सुंदरियाँ पूछें कि आप कौन हैं, इसके पहले ही जयंत ने कहा, ''अपनी मनपसंद कन्या से विवाह रचने के लिए राजप्रासाद से चुपचाप चला आया हूँ। मैं नहीं चाहता कि इस विषय में मेरे माता-पिता हस्तक्षेप करें। तुम दोनों में से किसी से भी विवाह करने के लिए मैं तैयार हूँ। आपके पिताश्री के लौटते ही मैं उनसे बात करूँगा।''

जयंत को जो कहना था, उसने साफ़-साफ़ कह दिया। इसपर वे दोनों युवतियाँ चकित रह गयीं। उन दोनों ने आपस में बातें कर लीं और कहा, ''हम दोनों जुड़वीं बहनें हैं। हमारे पिताश्री ने बहुत पहले ही कहा था कि हमारा विवाह किसी एक ही पुरुष से होगा।''

''बिना किसी संकोच के मैं तुम दोनों से विवाह करने को तैयार हूँ। समझता हूँकि यद्यपि तुम दोनों का रूप एक जैसा है, पर तुम्हारे गुण भिन्न-भिन्न होंगे। आप अब तक जान गयी होंगी कि मैं कौन हूँ। अपनी मनोदशाओं पर कृपया थोड़ा प्रकाश डालिये।'' बग़ल के पत्थर पर आसीन होते हुए जयंत ने कहा।

उसके इस प्रश्न पर दोनों युवतियों ने हँसते हुए कहा, ''हम दोनों जिद्दी हैं, हठी हैं। हम दोनों अपने को एक-दूसरे से अधिक मानती हैं। यही नहीं, जो साधना चाहती हैं, साधकर ही शांत होती हैं। इसके लिए हम कुछ भी करने के लिए सन्नद्ध रहती हैं। कोई भी त्याग करने को तैयार हो जाती हैं।''

''अच्छा, यह बात है!'' फिर जयंत ने एक क्षण के बाद पूछा, ''साफ़-साफ़ बता दीजिये

कि मेरे बारे में आप दोनों की क्या राय है?''

दोनों युवतियों ने आपस में बातें कर लीं और कहा, ''पिताश्री बहुत पहले ही हमसे कह चुके हैं कि बड़ा ही बुद्धिशाली और बिवेकी ही तुम दोनों का पति बनेगा। हमारे नाम हैं, मंदार और चंपा। क्या आप बता सकते हैं कि हममें से कौन मंदार है और कौन चंपा?''

थोड़ी देर तक सोचने के बाद जयंत बता सका कि उनमें से कौन मंदार है और कौन चम्पा। दोनों युवतियाँ यह सुनकर आश्चर्य में डूब गयीं और पूछा, ''आप यह कैसे बता सके?''

जयंत ने कहा, ''आप दोनों जुड़वी हैं। एक ही प्रकार की रूपरेखाएँ हैं। एक के शरीर का रंग गुलाबी है और दूसरे का हरा। मैं समझता हूँ कि शरीर के रंग के आधार पर आसानी से पहचानने के लिए एक का नाम मंदार और दूसरे का नाम चंपा रखा गया है। यह मेरी कल्पना मात्र भी हो सकती है।''

''हमारी उम्र में भी कुछ क्षणों का फर्क है। क्या आप बता सकते हैं, हममें से कौन बड़ी और कौन छोटी है?'' सुंदरियों ने पूछा।

जयंत ने एक क्षण रुक कर कहा, ''इसके लिए मुझे शाम तक समय दीजिये।'' दोनों ने स्वीकृति दे दी।

शाम को मंदार और चंपा ने केले के पत्तों में दो सब्जियाँ, दो चटनियाँ और खीर सहित जयंत को स्वादिष्ट खाना खिलाया। भोजन कर चुकने के बाद जयंत ने उनसे बताया, ''तुममें से मंदार बड़ी है और चंपा छोटी।''

''वाह, आपने बिलकुल ठीक कहा। इस निर्णय पर कैसे आ पाये?'' मंदार ने पूछा।

''साधारणतया उम्र में बड़ी ही रसोई व घर का काम संभालती हैं। छोटी घर के इधर-उधर का काम संभालती हैं। मंदार ने रसोई बनायी, चंपा ने पत्ता डालकर भोजन परोसा। मैंने इसपर ध्यान दिया और आसानी से जान गया कि तुममें कौन बड़ी हो और कौन छोटी।'' जयंत ने कहा।

मंदार और चंपा थोड़ी दूर हटकर आपस में बातें कीं और पास आकर जयंत से कहा, ''हम मानती हैं कि तुम बुद्धिमान हो और तुममें तार्किक विश्लेषण की अद्भुत शक्ति है। क्या तुममें हम दोनों के पालन-पोषण की आर्थिक शक्ति है?''

जयंत इसपर ठठाकर हँस पड़ा और बताया

कि वह कौन है। फिर पूछा, "कोई और शंका हो तो पूछ लीजिये।"

इसपर मंदार ने फ़ौरन कहा, "जन्म-पत्री के अनुसार हमारा विवाह एक ही व्यक्ति से होगा और हम दोनों एक ही दिन पुत्र को जन्म देंगी। परंतु छोटी चंपा के बेटे का जन्म कुछ क्षणों के पहले होगा और मेरा बेटा कुछ क्षणों के बाद। ऐसी स्थिति में, हममें से किसके पुत्र को आप राजा घोषित करेंगे?"

जयंत ने कहा, "इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए मुझे थोड़ा सा समय चाहिये।" "ठीक है। रात को सोच लीजियेगा और सवेरे अपना निर्णय सुनाइयेगा।" दोनों बहनों ने एक साथ कहा।

उस रात को जयंत के सोने के लिए एक कमरे का प्रबंध किया गया। दूसरे दिन प्रातःकाल मंदार और चंपा के पिता लौट आये। मंदार ने, पिता को सविस्तार पूरा विषय बताया तो चंपा ने जयंत के कमरे में झांककर देखा। वहाँ जयंत नहीं था।

वह लौटी और उनसे कहा, "कमरे में वे नहीं हैं। होनेवाले राजा को हमने एक दिन का आतिथ्य दिया, यही संतृप्ति हमारे लिए बच गयी।"

इस घटना के कुछ दिनों के बाद जयंत का विवाह उसके माता-पिता द्वारा चयनित कन्या से संपन्न हुआ।

वेताल ने यह कहानी सुनायी और कहा, "राजन्, सुंदरियाँ मंदार और चंपा के साथ जयंत की व्यवहार शैली अमर्यादित और अशोभनीय
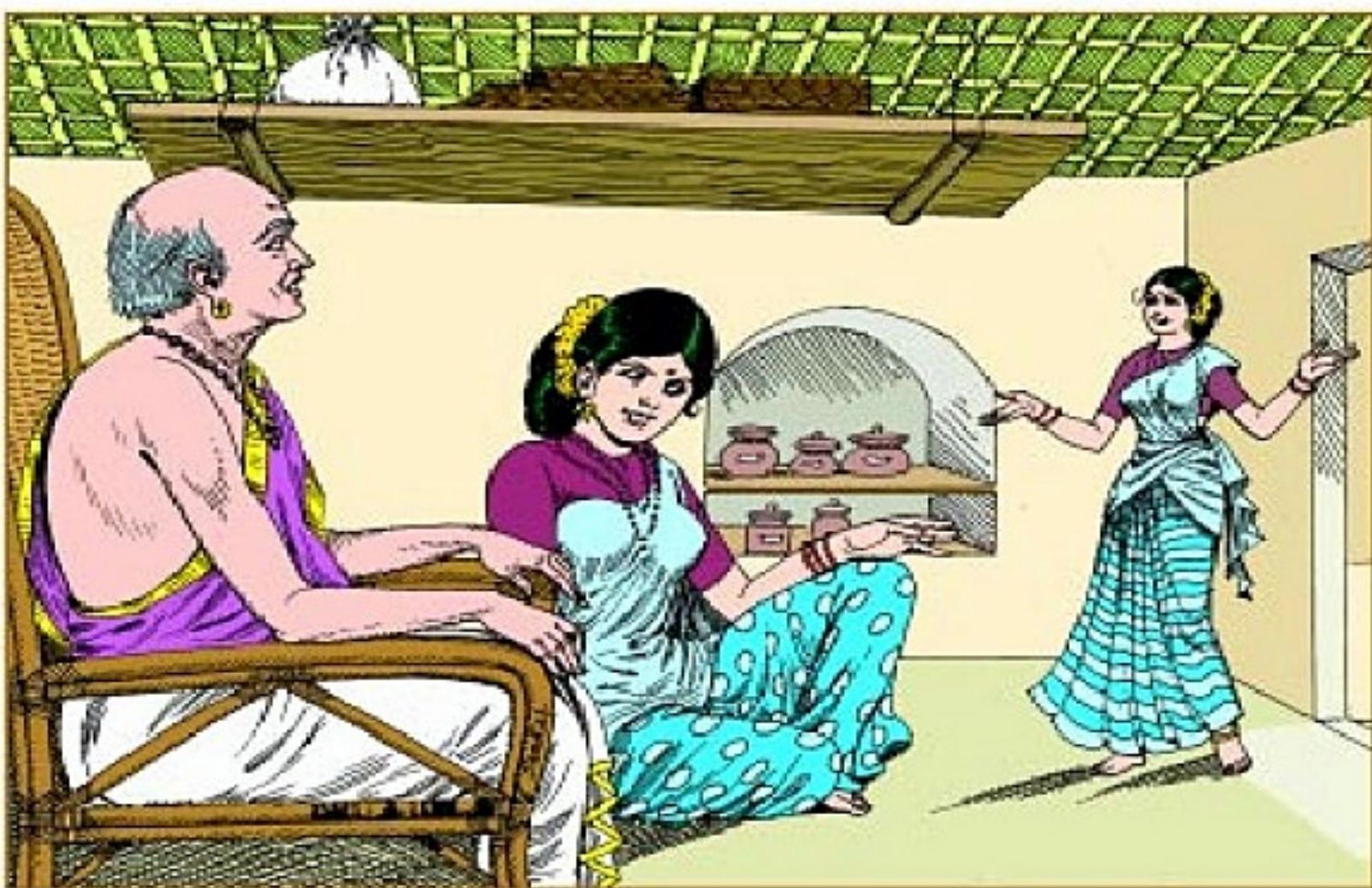
लगती है। वह भावी पत्नी को चुनने के लिए दृढ़ निश्चय के साथ निकला। उससे विवाह करने के लिए दो सुंदरियाँ सन्नद्ध भी हुईं। फिर भी, उसने उनका तिरस्कार किया और माता-पिता से चयनित कन्या से विवाह रचाया। उसका यह निर्णय क्या अनुचित नहीं था? उसकी आशा फलीभूत हुई, पर मानसिक चंचलता के वश में आकर उसने कुछ और ही किया। उसकी यह भूल और मानसिक चंचलता नहीं तो और क्या है?

''मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''मंदार और चंपा ने, जयंत के सामर्थ्य तथा उसके तार्किक ज्ञान को जानने के लिए ही कुछ जटिल सवाल पूछे। उन दोनों ने जो प्रश्न पूछे और अपने बारे में उन्होंने जो-जो बढ़ा-चढ़ाकर कहा, उनसे जयंत जान गया कि उनमें अहंभाव, हठ, जिद, आवश्यकता से अधिक हैं। साथ ही उनकी बातों से उसे यह भी मालूम हो गया कि वे अपनी इच्छा को किसी भी हालत में पूरी करनेवालियों में से हैं।

''उनका वह स्वभाव स्त्रियों के लिए कदापि उचित नहीं। इस सत्य को जयंत जान गया। अगर ऐसी स्त्रियाँ उसकी रानियाँ बनेंगी तो अवश्य ही अपने पुत्र को ही राजा बनाने के लिए जिद करेंगी और गंभीर समस्या खड़ी कर देंगी। इससे न ही अंतःपुर में शांति होगी और न ही राज्य सुरक्षित रहेगा। राजा के लिए अपनी इच्छाओं की पूर्ति से भी अधिक आवश्यक व महत्वपूर्ण हैं, देश की सुरक्षा, प्रजा का सुख-संतोष। इनपर बखूबी सोचने के बाद माता-पिता से चयनित कन्या से विवाह करना ही उसने उचित और न्याय- संगत समझा।

''इससे उसकी विवेचन शक्ति व परिशीलन ज्ञान स्पष्ट गोचर होते हैं। इसमें मानसिक चंचलता का कोई सवाल ही नहीं उठता।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

- के. *सुचित्रा देवी की रचना के आधार पर*

समाचार झलक

नौ वर्षीय फिल्म निर्देशक

हाल में ही नौ वर्षीय किशन ने २४ कन्नड़ फिल्मों तथा एक हजार एपिसोड्स के लिए पाँच मेगा टी.वी.सिरियल में कैमरे का सामना किया। अब वह फिल्म निर्देशक हो गया है और अक्सर कैमरे के पीछे देखा जाता है। उसकी निर्देशित पहली फिल्म कन्नड में 'केयर ऑफ फुटपाथ' है, जो रिलीज के लिए तैयार हो रही है।

उसने ये ट्रिक्स अपने ही निर्देशकों से सेट्स पर सीखे और कैमरामेन को राजी करके उनकी कला सीख ली। एक दिन उसने बच्चों को गलियों में अखबार और नुमाइशी चीजें बेचते देखा। उसके पिता ने बताया कि वे बच्चे यतीम हैं। तब उसने एक ऐसे यतीम बच्चे की कहानी लिखी जिसे स्कूल में पढ़ने की बड़ी इच्छा थी। उसके पिता ने इस पर एक फिल्म बनाने की सलाह दी और उसकी माँ ने फिल्म निर्माता बनने की पेशकश की। किशन को इस फिल्म के लिए जैकी श्रौफ, सौरभ शुक्ला जैसे बड़े अभिनेता और पुरस्कृत कन्नड अभिनेत्री तारा को पाने में कामयाबी मिल गई।

उसने यह अनुभव किया कि सेट्स पर उन सब के साथ काम करने में कम उम्र की वजह से कोई परेशानी नहीं हुई। ''हर कोई मुझे किसी और निर्देशक की तरह ही समझता है,'' किशन कहता है। वह आशा करता है कि वह विश्व के सबसे छोटे फिल्म निर्देशक के रूप मे अपनी पहचान बना लेगा। तत्सम्बन्धी कागज़ात गिनीज़ को मिल चुके हैं। वर्तमान समय में यह कीर्तिमान नेदरलैण्ड्स के सिडनी लिंग के पास है, जिसने १९७३ में १३ वर्ष की उम्र में एक फीचर फिल्म का निर्देशन किया था। सन् १९९६ में ६ जनवरी को जन्मा किशन गायक और संगीत रचयिता भी है। उसके प्रथम संगीत अलबम की १५,००० प्रतियाँ बिकीं।

महापुरुषों के जीवन की झाँकियाँ - ९

जिसके पास कुछ नहीं था

उस महायोगी ने अति प्राचीन पावन नगरी वाराणसी में एक सौ तीस वर्षों तक निवास करने के बाद सन् १८८७ की शरद ऋतु में गंगा के तट पर देह-त्याग कर दिया। पर उनका जन्म कब हुआ था?

यह अविश्वसनीय लगता है। किन्तु रुचि रखनेवालों के द्वारा जाँच-पड़ताल से यह बात सन्देह से परे सिद्ध हो गई है कि उनका जन्म सन् १६०७ में आन्ध्र प्रदेश के विजयानगरम राज्य में होलिया नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता नरसिंह राव थे और माता विद्यावती देवी थीं।

इनके माता-पिता शिव के भक्त थे, इसलिए उन्होंने अपने बालक का नाम शिवराम रखा। बच्चा बड़ा होने पर जिज्ञासु बन गया और साधु-सन्तों से मिलने लगा। बाद में वह राजस्थान में पुष्कर तीर्थ चला गया जहाँ उसने एक गुरु से दीक्षा ली। गुरु ने इन्हें गणपति सरस्वती एक दूसरा नाम दे दिया।

परन्तु वाराणसी में, जहाँ उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग बिताया, ये तेलंग स्वामी के नाम से लोकप्रिय हो गये क्योंकि ये आन्ध्र प्रदेश के रहनेवाले थे। शायद तुम जानते होगे कि प्राचीन काल में बिहार, बंगाल, उड़ीसा और आन्ध्र को क्रमशः अंग, बंग, कलिंग और तेलंग कहा जाता था।

तेलंग स्वामी ने अनेक चमत्कार दिखाये।

जिन्होंने इनके चमत्कारों को अपनी आँखों से देखा है, वे इन्हें वास्तविक तथ्य बताते हैं और इन्हें अतिरंजित करने का कोई कारण भी नहीं है। वे दिगम्बर रूप में ही घूमते रहते थे।

अंग्रेज़ महिलाओं ने, जो गुलामी के दिनों में भारत पर शासन करनेवाले अंग्रेज़ अधिकारियों की बीवियाँ थीं, इस पर आपत्ति की । स्वामी को हिरासत में लेने का आदेश देनेवाले मजिस्ट्रेट उसकी बालवत सरलता और उसके कुछ सार्थक चमत्कारों को देखकर हैरान हो गये। उन सब ने यह नोटिस निकाली कि स्वामी को उसकी असामान्य जीवन शैली के कारण कोई परेशान न करे।

हम यहाँ उनके अनेक चमत्कारों में से केवल एक का वर्णन करेंगे जिसकी इनके जीवनी लेखकों ने जानकारों से पुष्टि कर ली है। गंगा नदी स्वामी के लिए माँ के समान थी। वह कितने ही समय तक गंगा नदी में डुबकी लगाये रह सकते थे और सहज रूप से बिना प्रयास के धारा के विरुद्ध तैर सकते थे।

एक दिन जब उज्जैन के राजा एक नाव में गंगा नदी पार कर रहे थे तब स्वामी अचानक बीच में पानी से निकले और नाव में चढ़ गये। कुछ स्थानीय अभिजात वर्ग के लोगों ने, जो राजा के साथ थे, स्वामी के बारे में उन्हें बताया। राजा ने सम्मानपूर्वक उनका अभिवादन किया। लेकिन जब स्वामी ने एक उत्सुक बच्चे की भाँति राजा की रत्नजटित तलवार उठा ली और अचानक

टूटे हुए खिलौने की भाँति नदी में फेंक दी तब राजा के लिए असहनीय हो गया। राजा क्रोधित हो उठा, स्वामी को गालियाँ दीं, और निराश होकर चीखने-चिल्लाने लगा क्योंकि वह सामान्य तलवार नहीं थी बल्कि भारत के ब्रिटिश गवर्नर-जनरल द्वारा उन्हें भेंट स्वरूप दी गई थी। यह उनकी ऊँची प्रतिष्ठा का प्रतीक था।

स्वामी पर राजा की झल्लाहट और चिल्लाहट का कोई असर नहीं हुआ, "धिक्कार है तुझे हे सनकी साधु! मेरी सबसे मूल्यवान सम्पति चली गई! अब मैं क्या करूँ?"

नाव किनारे पर आ गई। तेलंग स्वामी ने छिछले पानी में यों ही अपना हाथ डाल कर निकाला। आश्चर्य! उनके हाथ में दो तलवारें थीं। यह देख राजा हक्का-बक्का हो गया।

"तुम अपनी तलवार उठा लो।" स्वामी ने चकित राजा से कहा। लेकिन दोनों तलवारें हूबहू एक जैसी थीं। किंकर्त्तव्यविमूढ़ राजा को देखकर स्वामी ने पूछा, "क्या तुमने दावा नहीं किया था कि तलवार तुम्हारी सम्पति है? फिर क्यों अपनी ही सम्पत्ति को पहचानने में असमर्थ हो?" तब उसने एक तलवार को नदी में फेंक दिया और दूसरी तलवार राजा को सौंप दिया जो सचमुच उसी की थी।

अवाक् राजा ने महसूस किया कि मनुष्य की यह कितनी बड़ी मूर्खता है कि वह किसी चीज को अपनी समझ बैठता है। शायद उसने यह भी अनुभव किया कि सच्चा योगी कुछ भी हासिल कर सकता है भले ही उसके शरीर पर चिथड़ा भी न हो। ***(एम.डी)***

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-६ के विजेता (जुलाई २००६)

एस. हर्षनन्दना

C/o. एम. नटराजन, न.३१, १० वाँ ए क्रॉस

दूसरा क्रॉस, सुन्दरी मेमोरियल मार्ग, ईजीपुर,

डा. विवेक नगर, बंगलोर - ५६० ०४७.

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-६ के उत्तर :

१. कोरिया देश का राजा कथाः - "राजा ने अपना सबक सीखा"
२. डिग्बोई (आसाम राज्य)
३. १४ वाँ वर्ष
४. गोदावरी
५. अक्तूबर १६
६. फारस (अब ईरान)
७. बद्रुद्दीन तैय्यब्जी
८. "कौन भला है, कौन बुरा है?"

सँपेरा राजा

महेंद्रपुरी राज्य में सर्पवर नामक एक गाँव हुआ करता था। उस गाँव मेंसांबशिव नामक एक सँपेरा रहा करता था। वह साँपों को बड़ी चालाकी से पकड़ता था और उनके विष उगलवाता था। साँप की डसन की चिकित्सा भी करता था। वह इसके लिए मशहूर भी था।

लंबे अर्से के बाद उसका एक बेटा हुआ। उसने बेटे का नाम नागराज रखा और बड़े लाड़-प्यार से उसकी परवरिश करने लगा। सांबशिव की पत्नी को जन्म-कुंडलियों पर अटूट विश्वास था। उसने एक बार एक प्रसिद्ध ज्योतिषी को बेटे की जन्म कुंडली दिखायी।

ज्योतिषी ने नागराज की जन्म-कुंडली बड़े ही ध्यान से देखी और चकित होकर सांबशिव दंपति से कहा, ''अरे वाह, बड़ी ही विचित्र बात है। तुम्हारा बेटा राजा बनेगा। इसके भाग्य में राजयोग है।''

''मेरा बेटा राजा बनेगा! हँसी-मज़ाक छोड़िये। असली विषय बताइये।'' सांबशिव ने कहा।

''हँसी-मज़ाक नहीं कर रहा हूँ। सच ही बता रहा हूँ। तुम्हारा बेटा जब राजा बनेगा तब मुझे भूलना मत,'' ज्योतिषी ने जन्म-कुंडली उसके हाथ में थमाते हुए कहा।

सांबशिव में, ज्योतिषी की बातों पर विश्वास पैदा हो गया। उसने सोचा कि बेटा अगर राजा बनेगा तो उसका अनपढ़ होना अच्छा नहीं होगा। उसने उसे पाठशाला में भर्ती करवाया।

अब नागराज दस साल का हो गया। पिता की ही तरह साँपों को पकड़ने में वह माहिर हो गया। पढ़ने-लिखने में भी वह बड़ा ही तेज़ था। दूसरे लड़के उसकी बराबरी नहीं कर पाते थे। उसके सहपाठी उससे ईर्ष्या करते थे, क्योंकि वह उनसे अधिक अक़्लमंद था। इसलिए वे उसके

शिवराम
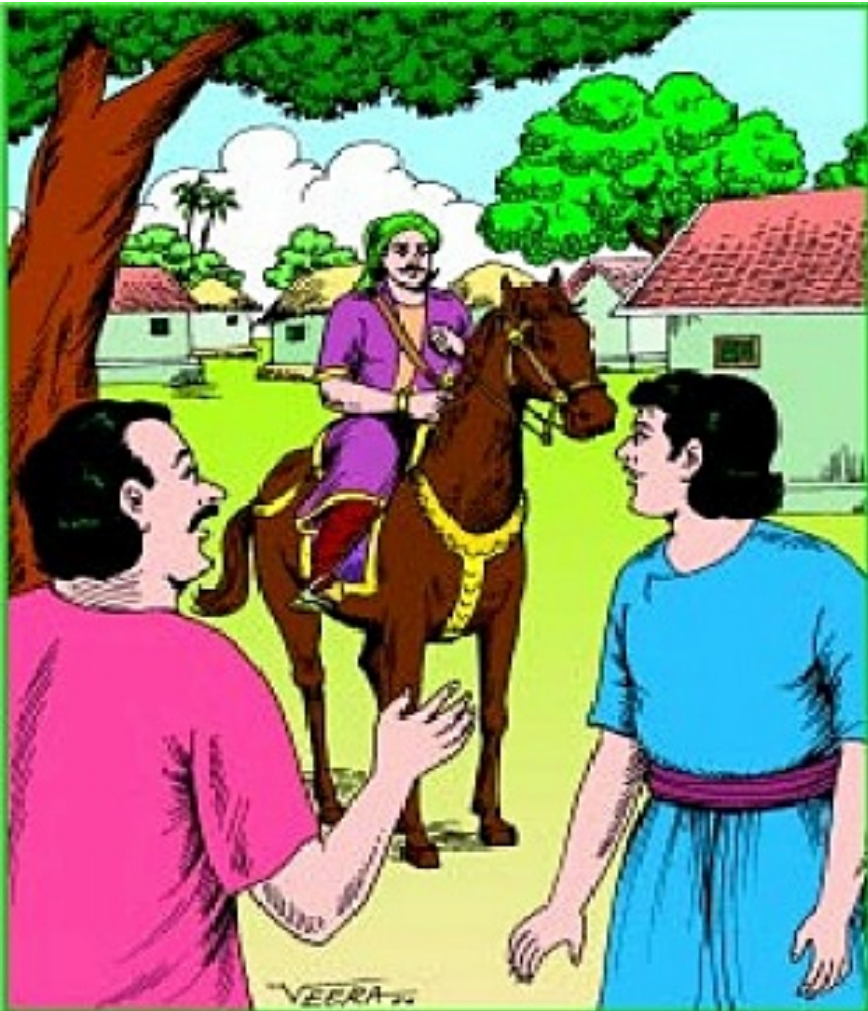
राजयोग पर ताने कसते थे और उसे संपेरा राजा कहते हुए उसकी खिल्ली उड़ाते रहते थे।

नागराज के यौवन में प्रवेश करते-करते सांबशिव ने बुढ़ापे में क़दम रखा। तब तक नागराज ने सर्पों के बारे में सब कुछ जान लिया। साँप के डंक के लिए वह जो दवा देता था, वह अचूक होता था। सांबशिव को बड़ी आशा थी कि मरने से पहले बेटे को राजगद्दी पर आसीन देखूँ। परंतु वह दिन आया ही नहीं। नागराज की शादी की उम्र भी हो गयी। परंतु सांबशिव तुरंत उसकी शादी कर देने के पक्ष में नहीं था। वह चाहता था कि राजा बनने के बाद ठाठ-बाट से उसकी शादी कराऊँ और यह भव्य दृश्य देखकर धन्य हो जाऊँ। ज्योतिषी से वह फिर से इसके बारे में जानकारी पाना चाहता था, पर एक साल पहले उसकी मृत्यु हो चुकी थी।

इतने में एक आकस्मिक घटना घटी। राजा का एक घुड़सवार सैनिक जब सर्पवर की गली से गुज़र रहा था, तब नागराज उसके सामने आया। सैनिक ने गरजते हुए उससे कहा, ''कौन हो तुम? बुद्धिहीन हो या घमंडी? हटो मेरे सामने से।''

उसकी बातें सुनकर एक ग्रामीण ने सैनिक से कहा, ''हमारे नागराज से इज़्ज़त के साथ पेश आना। वह होनेवाला राजा है।''

सैनिक ने चकित होकर उन दोनों को देखा और वहाँ से चला गया। पर, एक हफ्ते के बाद कुछ सैनिक गाँव में आये और नागराज को अपने साथ लेकर महाराज विजयवर्धन के पास ले गये।

इस बात को लेकर गाँव में तरह-तरह की अफवाहें उड़ीं। एक ने कहा, ''अगर राजा को मालूम हो जाए कि हम इसे होनेवाला राजा कहते रहते हैं तो वे क्या चुप रहेंगे? इसका सिर धड़ से अलग करने के लिए ही बुलवाया होगा।''

यह सुनते ही सांबशिव ड के मारे कांप उठा। वह निराश हो गया और ज्योतिषी की भविष्य बाणी पर से उसका विश्वास उठ गया। वह काली माता के मंदिर गया और हाथ जोड़कर कहा, ''माते, मेरा बेटा राजा न भी बने, तो भी कोई बात नहीं। बस, उसे कोई हानि न पहुँचे, इसका ख्याल रखना।''

परंतु, ऐसा कुछ नहीं हुआ। उल्टे, राजा विजयवर्धन ने घोषणा की कि नागराज का विवाह उसकी बेटी नागमोबा से होगी। यह सुनकर राज्य

के सभी लोग आश्चर्य प्रकट करने लगे और कहने लगे कि एक सँपेरे से राजकुमारी का विवाह!

सांबशिव की खुशी का ठिकाना न रहा। उसे सहसा विश्वास नहीं हुआ कि ज्योतिषी की वाणी जैसे सचमुच असलियत में बदल गई। सर्पवर गाँव के वासी भी बड़े प्रसन्न हुए और अपने को धन्य मानने लगे कि उन्हीं का एक साथी उनका राजा बनेगा।

एक महीने के अंदर ही राजकुमारी नागमोबा का विवाह बहुत बड़े पैमाने पर नागराज से संपन्न हुआ। नागराज के माता-पिता का भव्य स्वागत हुआ और उनका सम्मान भी।

एक दिन रात को जब नागराज, राजकुमारी के साथ शय्या पर सोया हुआ था तब उसने साँप की फूफकार सुनी। उसने तुरंत आँखें खोली तो देखा कि एक सर्प फन फैलाये राजकुमारी की ओर बढ़ता चला आ रहा है। नागराज फ़ौरन शय्या से उतरा और सर्प की पूँछ पकड़कर उसे घुमाते हुए ज़मीन पर पटक दिया। सर्प छटपटाता हुआ मर गया।

दूसरे ही क्षण राजकुमारी जब जागी तो उसने नागराज से यह विषय जाना और उसके साहस की भरपूर प्रशंसा की। क्षणों में यह बात महाराज तक पहुँच गयी। महाराज विजयवर्धन ने बड़े ही प्यार से नागराज को गले से लगाते हुए कहा, ''बेटे, मेरी इकलौती बेटी को तुमने प्राण भिक्षा दी।'' फिर उसने सविस्तार उससे बताया कि किन कारणों से उसने अपनी बेटी की शादी उससे करायी।

विजवर्धन के दादा अजयवर्धन ने दीर्घ काल

तक शासन-भार संभाला। बुढ़ापे में उसने बेटे जयवर्धन का राज्याभिषेक किया और शेष जीवन में दैव पूजा में लीन होने के लिए अरण्य में स्थित एक मुनि के आश्रम में रहने लगा।

इसके कुछ दिनों के बाद, जयवर्धन आखेट करने जंगल गया। वहाँ विषैले साँप के डसने से उसकी मृत्यु हो गयी। तब विजयवर्धन महेंद्रपुरी का राजा बना। राजा होने के छे सालों के बाद रानी ने एक सुंदर कन्या को जन्म दिया। अरण्य में स्थित् मुनि आश्रम में रहनेवाले कन्या के दादा से आशीर्वाद पाने विजयवर्धन वहाँ गया।

अजयवर्धन पोती को देखते ही चौंक उठा। आँखें बंद करके थोड़ी देर तक वह ध्यान में निमग्न रहा, फिर आँखें खोलकर विजयवर्धन से कहा, ''तुम्हारे पिता जिस प्रकार सर्प के डसने से मर गये, उसी प्रकार तुम्हारी पुत्री को भी सर्प का ख़तरा है। इस शिशु का नाम नागमोबा रखो और हर दिन श्रद्धापूर्वक नाग देवताओं की पूजा करते रहो। खतरा टल जायेगा और भला होगा। यही नहीं, बड़ी हो जाने के बाद इसके विवाह और पति के चयन के विषय में सावधानी बरतना, जल्दबाज़ी मत करना। उसके पति का साहसी, पराक्रमी और निडर होना बहुत ही ज़रूरी है।''

राजकुमारी जब बालिग़ हुई, विजयवर्धन सर्प के ख़तरे के बारे में सोचता रहा और विवाह के प्रयत्नों में भी लगा रहा। ऐसे समय पर सैनिक ने आकर कहा कि ग्रामीण नागराज को होनेवा ले राजा कहते हैं। राजा ने फ़ौरन नागराज को बुलवाया और उसके बारे में जानकारी प्राप्त की। राजकुमारी नागमोबा की जन्म-कुंडली और नागराज की जन्म-कुंडली बिलकुल ही मिलती जुलती थी। राजा को यह भी मालूम हुआ कि नागराज साँपों को पकड़ने में दक्ष है और उनकी डसन की चिकित्सा करने में भी प्रवीण है। सब कुछ दैव संकल्प मानते हुए राजा विजयवर्धन ने, नागराज से अपनी बेटी का विवाह रचाया।

वृद्ध होने पर के बाद विजयवर्धन ने नागराज का नाम नागराजवर्धन रखा और उसका राज्याभिषेक किया। परंतु, सर्पवर के ग्रामीण उसे प्यार से सँपेरा राजा ही कहकर पुकारते रहे।

चन्दामामा प्रश्नावली-८

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

*सही उत्तर देनेवाले एक से अगर अधिक हों तो पुरस्कार की रक़म ड्रा द्वारा निकाले गये सही उत्तर देनेवाले पाँच लोगों में समान रूप से बाँटी जायेगी।

इस प्रश्नावली में जो भी प्रश्न पूछे गये हैं, वे सबके सब जनवरी व दिसंबर २००५ के बीच में चन्दामामा के अंकों में प्रकाशित कहानियों व शीर्षकों में से लिये गये हैं, जिन्हें आप पढ़ चुके हैं। वे यदि याद हों तो इन सबके उत्तर आप तुरंत बता सकेंगे। यदि याद नहीं हों तो बारहों अंकों को सामने रख लें और पन्ने पलटें तो उन्हें आसानी से जान जायेंगे। अवश्य ही बड़ा मज़ा आयेगा।

आपको यह करना है: १. उत्तर लिखिये, २. अपना नाम और उम्र (१६ वर्ष की उम्र के अंदर होना आवश्यक है); पिनकोड सहित सही पता हो, ३. एक परिवार में सिर्फ एक ही सदस्य भाग लें, ४ अभिदाता हों तो वह संख्या लिखिये, ५. लिफ़ाफे पर **चन्दामामा प्रश्नावली-८** लिखें और उसे चन्दामामा के पूरे पते पर हमें भेजिये, ६. सितम्बर महीने के अंत तक आपकी प्रविष्टि हमें मिल जानी चाहिये, ७. नवम्बर महीने के अंक में परिणाम प्रकाशित किये जायेंगे।

१. एक मानव और देवता के बीच में आनंद के साथ शुरू हुआपरिचय, उस मानव के स्वभाव, दु:साहस और गर्व से भरा हुआ है। इस कारण से यह विदेश गाथा विषाद में परिवर्तित हुई। वह गाथा कौन-सी है? उस मानव का क्या नाम है? देवता का नाम क्या है?

२. क्या आप बता सकते हैं कि २०५० तक भारत की जनसंख्या कितनी होगी?

३. ''योग्यताहीन व्यक्ति की सहायता करना सबसे बड़ा पाप है।'' किस गृहिणी ने पिशाच को यह पाठ सिखाया? उस गृहिणी का क्या नाम है? यह किस कहानी में है?

४. चंद्रगुप्त विक्रमादित्य (ईसवी ३७५-४१३) के काल में वे चीन के यात्री कौन हैं, जिन्होंने हमारे देश में पर्यटन किया है?

५. कहा जाता है कि 'पोलो' खेल का मूल हमारे ही देश के एक नगर में था। उस शहर का क्या नाम है?

६. वह कहानी कौन-सी है, जिसमें बताया गया है कि सुख से जीवन बिताने का मार्ग परिश्रम से बढ़कर और कोई नहीं है।

७. यह चित्र किस कहानी का है?
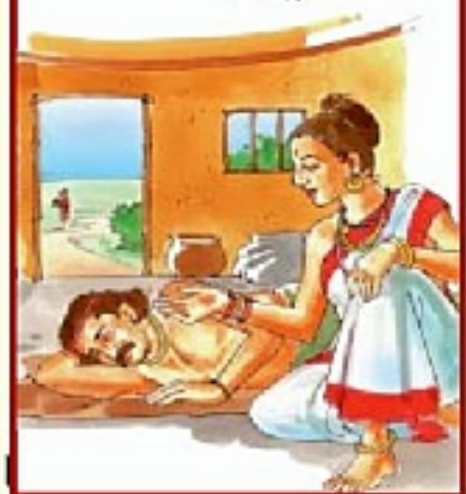
शारदा का निर्णय

शारदा, भूषण और पार्वती की इकलौती पुत्री थी। वे गंगापुर के निवासी थे। वे बड़े किसान परिवार के थे। उन्हें किसी भी चीज़ की कमी नहीं थी। पूरा परिवार हमेशा यथा शक्ति दूसरों की सहायता करता रहता था।

बालिग शारदा बड़ी ही अक़्लमंद और होशियार थी। गाँव के किसी आदमी को अगर किसी समस्या का सामना करना पड़ता तो वह पल भर में उसका समाधान कर देती। उसके माता-पिता उससे बेहद खुश थे।

शारदा के विवाह के प्रयत्न शुरू हो गये। भूषण ने पुरोहित को बुलवाया और उससे विषय बताया। पुरोहित ने फ़ौरन थैली में से दो छायाचित्र निकाले

और उनमें से प्रथम छायाचित्र को दिखाते हुए कहा, ''इस लड़के का नाम चंद्र है। यह रामापुर का है। यह अपने माँ-बाप का इकलौता पुत्र है। नाम के अनुरूप ही यह स्वच्छ है। चाँद की तरह इसमें कोई दाग़ नहीं है। अब रही संपत्ति की बात, आराम से जीवन बिताने के लिए जितनी पर्याप्त चाहिये, उतनी है। इनका घर सदा ज़रूरतमंद लोगों से भरा हुआ रहता है।'' पुरोहित ने कहा।

इसके बाद द्वितीय छायाचित्र दिखाते हुए पुरोहित ने कहा, ''इसका नाम भास्कर है। यह शंखवर गाँव का है। आकाश भले ही मेघों से आच्छादित क्यों न हो, पर यह उस मध्याह्न सूर्य की तरह है, जो सबको दिखता है। सूर्यास्त पश्चिम में होता है, पर यह वह सूर्य है, जिसका कभी अस्त नहीं होता। उसकी अपार संपत्ति है। चंद्र से चार गुना अधिक। वह उस परिवार का एकमात्र वारिस है।''

शारदा के माता-पिता ने अपना निर्णय चार दिनों के बाद सुनाने का आश्वासन देकर उसे भेज दिया। फिर, उसी रात को उन्होंने शारदा से उसकी राय पूछी। शारदा ने बिना सकपकाये निस्संकोच कह दिया, ''मैं चंद्र से विवाह करूँगी।''

''क्या कह रही हो बेटी, संपत्ति में भास्कर, चंद्र से चार गुना बड़ा है। हम तो समझ रहे थे कि भास्कर से शादी करोगी तो तुम सुखी रहोगी।'' माँ पार्वती ने कहा। भूषण ने पत्नी का समर्थन किया।

''लगता है, आपकी दृष्टि केवल संपत्ति पर ही है। आपने पुरोहित की बातों का अंतरार्थ नहीं समझा।'' शारदा ने कहा।

''पुरोहित ने कहा था कि भास्कर सूर्य के समान है, जिसका कभी अस्त नहीं होता। इसका यह मतलब हुआ कि वह बहुत ही क्रोधी है। सबों पर अपनी धाक जमाता रहता है, उनपर अपना अधिकार चलाने की कोशिश करता है। बादल छा भी जाएँ तो वह चमकनेवाला है, अपना प्रकाश विकीर्ण करने की तीव्र आकांक्षा रखता है, जिसका यह अर्थ हुआ कि वह किसी की बात सुनने या मानने को तैयार नहीं। ऐसे व्यक्ति के साथ रह कर मैं कैसे परिवार चला सकूँगी।'' शारदा ने कहा।

''तो चंद्र के बारे में तुम्हारा क्या कहना है?'' माँ ने पूछा।

''चंद्र का अपना प्रकाश नहीं है। वह सूर्य की कांति को स्वीकार करता है और शीतल चांदनी को बिखेरता है। इसका यह मतलब हुआ कि चंद्र अपने माता-पिता व बड़ों की सलाहें लेता है, खुद सोचता है और फिर आगे बढ़ता है। अगर मैं उससे शादी करूँगी तो वह मुझसे भी सलाह लेगा। इससे आपस में या परिवार में कोई गड़बड़ी नहीं होगी, भेद-भाव नहीं होंगे। इसीलिए पुरोहित ने चंद्र को स्वच्छ और निर्मल कहा। उस घर के लोग सबसे हिल-मिलकर रहते हैं, इसीलिए वह घर सदा लोगों से भरा हुआ होता है। जायदाद चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, हमें बस, पेट भर खाना है। हमारे घर में जिस तरह का वातावरण है, उसी तरह का वातावरण चंद्र के घर में भी है। मानवीय लक्षणों से सुसज्जित चंद्र ही मेरा पति होने के सर्वथा योग्य है। वहाँ जो भी मिले, उसी से मैं संतृप्त रहूँगी।'' शारदा ने दृढ़ स्वर में कहा।

भूषण और पार्वती को बेटी की बातें, विचार और तर्क बिलकुल सही लगे। अपनी बेटी की अक़्लमंदी पर पार्वती फूली न समायी। शारदा की इच्छा के अनुसार ही चंद्र से शारदा का विवाह संपन्न हुआ। ***- पि.वैष्णवी, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश***

प्रागैतिहासिक चित्रकलाएँ

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से करीब ४० कि.मी.दूर भीमबेटका है जो वहाँ की लगभग ६०० गुफाओं में शैल भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। सामान्य रूप से यह विश्वास किया जाता है कि ये चित्रकलाएँ पृथ्वी पर मानवजीवन के सबसे प्राचीनतम चित्रणों में से एक हैं।

इन लगभग एक लाख वर्ष पुरानी चित्रकलाओं को देखकर कोई भी इनके रूपों और आकारों की यथातथ्यता पर विस्मित रह जायेगा चाहे वे चित्र मनुष्यों, पशु-पक्षियों के हों या सरल रेखाओं, वृतों, त्रिभुजों, वर्गों और षटभुजों के, जो आखेट, पाक क्रिया, जलावन की लकड़ी के काटने या पानी लाने जैसे बहुपक्षीय मानव जीवन को दर्शाते हैं।

इन चित्रों से यह पता चलता है कि कैसे शिकारी - मानव से कृषक - मानव का विकास हुआ तथा बाद में उसने कैसे परिवार की स्थापना की। उन चित्रों में यह भी दर्शाया गया है कि स्त्री-पुरुष एक दूसरे का हाथ पकड़ कर नृत्य करते हैं, शोभायात्रा निकालते हैं और भिन्न-भिन्न तरीकों से उत्सव मनाते हैं।

प्रसंगवश, भीमबेटका की गुफाओं का पता केवल करीब ५० वर्ष पूर्व ही हुआ है।

सुंदर की चाह

रंगनाथ रामापुर के राम के मंदिर का पुजारी था। जानकी से उसकी शादी हुई। शादी के दस सालों के बाद उनका एक बेटा हुआ। उन्होंने उसका नाम रखा सुंदर और बड़े ही लाड़-प्यार से उसकी परवरिश करने लगे।

बचपन से ही सुंदर पेटू था। हमेशा खाने के ही चक्कर में लगा रहता था। मंदिर का आधे से ज्यादा प्रसाद वही खा जाता था। इस वजह से वह मोटा होता गया और सुस्त भी होता गया। कोई भी काम करता नहीं था।

रंगनाथ की तीव्र इच्छा थी कि उसे मंदिर में पूजा के लिए आवश्यक मंत्र व श्लोक सिखाऊँ। परंतु उसकी हर कोशिश नाकाम रही। लाख कोशिशों के बाद भी सुंदर उन श्लोकों को दोहरा नहीं पाता था। वह बीस साल की उम्र का हो गया। भारी-भरकम शरीर का हो तो गया, पर उसमें साहस रत्ती भर भी नहीं था। अपनी परछाईं को ही देखकर वह डर के मारे कांपने लगता था।

''बेटे सुंदर, तुम मंदिर के पुजारी बन ही नहीं सकते। तुम्हारी ज़िन्दगी कैसे कटेगी।'' चिंतित रंगनाथ ने कहा।

जब कभी भी रंगनाथ ऐसी चिंता व्यक्त करता था तब सुंदर उससे कहा करता था, ''पिताजी, हमारे गाँव में मिठाई की कोई दुकान नहीं है। हमारी गली के चबूतरे पर कांचों से बनी मिठाई की दुकान खुलवाइये। पाँव पर पाँव धरे आराम से मिठाई का व्यापार करूँगा और खूब कमाऊँगा।''

उसकी इन बातों पर चिढ़ता हुआ रंगनाथ कहता था, ''देखो, मिठाई का व्यापार करने के लिए बहुत पूंजी चाहिये। मेरी छोटी बहन की शादी की जिम्मेदारी भी मेरे सिर परहै। मेरी बात मानो। अब ही सही, मंत्र सीखो और भविष्य में मंदिर का पुजारी बनो। पुरुषोत्तम राम तुम्हारी रक्षा करेंगे।''

''उन मंत्रों को सीखना मेरे बस की बात नहीं

मणिकलाल

है। जन्म से ही मैं भीरु हूँ। आपने हनुमान चालीसा सिखलाया। उसे कंठस्थ करने में दस साल लग गये तो इतने मंत्र कैसे सीख पाऊँगा।'' सुंदर ने कहा।

ऐसी परिस्थितियों में, रंगनाथ की छोटी बहन की शादी तय हुई। रंगनाथ शहर गया और बहन के लिए दस साड़ियाँ खरीदीं। जब वह साड़ियों की गठरी लेकर दुकान से बाहर आ रहा था तब उस रास्ते से गुज़रते हुए एक रिश्तेदार ने उनके एक निकट बंधु की मृत्यु का समाचार उसे सुनाया। रंगनाथ ने तुरंत साड़ियों की गठरी दुकानदार को सौंपी और कहा, ''अभी-अभी मेरे एक निकट रिश्तेदार की मृत्यु हो गई है। मेरा वहाँ जाना बहुत ज़रूरी है। साड़ियों की गठरी बाद में ले जाऊँगा।'' कहकर वह निकल पड़ा।

शव यात्रा में भाग लेकर जब वह घर पहुँचा, तब रात हो गयी और वह अस्वस्थ भी हो गया। बुखार से वह पीड़ित होने लगा। दूसरे दिन भी जब वह स्वस्थ नहीं हो पाया तो उसने बेटे सुंदर को बुलाया और कहा, ''तुम कपड़े की दुकान पर जाकर साड़ियों की गठरी ले लेना और अंधेरा छा जाने के पहले ही घर लौट आना। रास्ते में चोरों का ख़तरा है। सावधान रहना।'' बैलगाड़ी के किराया के लिए बीस रुपये भी उसे दिये।

सुंदर शाम तक शहर पहुँचा और कपड़ों की दुकान में गया। दुकान के मालिक ने उसे देखते ही कहा, ''पिता की खरीदी साड़ियों की गठरी लेने आये हो क्या? लो, यह गठरी। क़ीमती साड़ियाँ हैं, सावधानी बरतना।''

सुंदर ने गठरी सिर पर रख ली और निकल पड़ा। उसने गली में मिठाइयों की एक बड़ी दुकान देखी। उसने सोचा, 'किराये की गाड़ी के लिए बीस रुपये भला क्यों दूँ। उस रक़म से तरह-तरह की मिठाइयाँ खरीदकर खाऊँगा और आराम से घर पहुँचूँगा।'

मिठाइयाँ लेकर उन्हें खाते हुए वह पैदल जाने लगा। तब तक अंधेरा छा चुका था। एक पेड़ के नीचे पाँच भूतनियाँ बैठकर आपस में बातें कर रही थीं। जैसे ही उन्होंने सुंदर को देखा, वे स्त्रियों के रूप में परिवर्तित हो गईं और तालियाँ बजाते हुए सुंदर को अपने पास बुलाया।

सुंदर डर गया। पर अपने को संभालते हुए मन ही मन सोचा, 'समझा, चोर हैं, परंतु चोर तो

मर्द होते हैं। ये तो स्त्रियाँ हैं।' वह इसी बात को लेकर सोच ही रहा था कि इतने में वे भूतनियाँ उसके पास आयीं और कहने लगीं, ''रिश्तेदार के घर शादी है, वहाँ हमें जाना था, पर भटक गयीं। अच्छा, यह तो बताना कि उस गठरी में क्या है?''

''यह साड़ियों की गठरी है। मेरे पिताजी ने अपनी बहन के लिए खरीदी हैं।'' सुंदर ने धैर्यपूर्वक कहा।

''हमें भी उन्हें देखने दो। देखते हैं कि वे साड़ियाँ कितनी सुंदर हैं,'' कहती हुई भूतनियों ने गठरी छीन ली।

सुंदर ने तुरंत पास ही की एक सूखी लकड़ी ली और कहा, ''लगता है, तुम स्त्री चोर हो, ख़बरदार।'' कहते हुए उसने लकड़ी उठायी।

इतने में उन औरतों ने एक छोटी-सी थैली उसकी ओर बढ़ाया और कहा, ''इसमें सोने की एक सौ सोलह अशर्फ़ियाँ हैं। शादी पर दुलहिन को भेंट स्वरूप देने ले जा रही हैं। हम विवाह मुहूर्त पर वहाँ पहुँच नहीं पायेंगी, इन्हें तुम्ही रख लेना। बस, हमें ये साड़ियाँ देखने मात्र देना।''

यह जानते ही कि वे सोने की अशर्फ़ियाँ हैं उसकी आँखें चमक उठीं। वह तुरंत ज़मीन पर बैठ गया और अशर्फ़ियों को गिनने लगा। दो-तीन मिनटों के बाद उसने भूतनियों की विचित्र हँसी सुनी। उसने सिर उठाकर देखा कि भूतनियाँ गठरी खोल रही हैं और उन्हें पहनने की तैयारी में लगी हैं।

सुंदर में संदेह जगा। वह भयभीत हो गया। उसे लगा कि ये अवश्य ही भूतनियाँहोंगी। बस, वह ऊँचे स्वर में हनुमान चालीसा पढ़ने लगा। दूसरे ही क्षण वे भूतनियाँ किकियाती हुई इमली के पेड़ पर जा बैठ गयीं।

सुंदर ने हनुमान चालीसा पढ़ते हुए साड़ियों को इकट्ठा किया, गठरी बाँधी और अशर्फ़ियों के साथ सबेरे-सबेरे घर पहुँचा।

यों, पिशाचिनियों की कृपा से, सुंदर की फूफी का विवाह धूमधाम से हुआ। उसके पिता रंगनाथ ने उसके लिए कांचों से बनी एक मिठाई की दुकान भी बनवा दी। यों सुंदर की चाह पूरी हो गई।

बिहार की एक लोक कथा

कपटी साधु

राजप्रासाद के परकोटे के बाहर एक विशाल बरगद खड़ा था। एक दिन उसके नीचे एक व्यक्ति आसन लगाये आँखें बन्द कर ध्यान कर रहा था। विचित्र बात यह थी कि वह दाढ़ी साफ किये हुए था और सुन्दर दिखाई पड़ता था। प्रातःकाल से रात होने तक आँखें बन्द किये वह वहीं बैठा रहता। कुछ राहगीर चकित हो कुछ देर तक टकटकी लगाये

उसे देखते और फिर चले जाते। कुछ अन्य, उसके सुन्दर चेहरे से आकर्षित हो इस उम्मीद से वहाँ बैठ जाते कि वह ज्ञान की कुछ बातें बता दे। उन्हें उससे बात करने का साहस नहीं होता। कुछ देर के बाद वे भी उठ कर और उसके सामने कुछ सिक्के डाल कर चले जाते। उन सिक्कों को देखकर और चढ़ावे आते। किसी ने उसे खाते-पीते नहीं देखा, इसलिए लोग उसे फकीर या साधु समझने लगे।

रात होने पर उसके ''शिष्य'' उससे मिलते और वह, उनके द्वारा लाया जो भी भोजन होता, खा लेता और तब वे चुपचाप उस स्थान का साफ-सुथरा कर अपने काम-चोरी करने चले जाते। सुबह होने से पहले साधु पुनः बरगद के नीचे वापस आ जाता।

धीरे-धीरे राजा को महल की चहारदिवारी के बाहर बैठे साधु के बारे में पता चला और उससे मिलने की उसे इच्छा हुई। वह एक दिन अपने अंगरक्षक के साथ उससे मिलने गया। अंगरक्षक ने साधु को ध्यान से जगाया, ''हे साधु महाराज, आपसे मिलने के लिए राजा आये हुए हैं।''

साधु ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं और राजा को आशीर्वाद दिया, ''वत्स, चिरंजीवी भव!''

राजा ने कहा, ''कृपया मेरे महल में पधारिये।

मैं आप के आवास का प्रबन्ध कर दूँगा। आप शान्तिपूर्वक ध्यान कर सकते हैं।''

''मुझे आने में बहुत प्रसन्नता होगी किन्तु एक शर्त पर कि आप को मेरे शिष्यों के मेरे साथ ठहरने में कोई आपत्ति नहीं होगी।'' साधु ने कह और आँखें बन्द कर लीं। राजा ने सोचा कि यह उसके चले जाने का संकेत है।

राजा ने एक कुटिया बनाने का आदेश दिया। जब कुटिया तैयार हो गई, राजा ने अपने अंगरक्षक को साधु के पास भेजा। साधु ने कहा कि अपने शिष्यों के आ जाने पर उनके साथ महल की कुटिया में आ जायेगा।

जब साधु अपने तीन शिष्यों के साथ महल में गया, अंगरक्षक उनके स्वागत के लिए मुख्य द्वार पर खड़ा था। उसने द्वारपालों को आदेश दिया कि वे साधु या उसके शिष्यों को जब भी चाहें, महल से बाहर जाने दें।

दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही राजा कुटिया में गया। साधु गहरे ध्यान में डूबा था। एक शिष्य ने ऊपर जाकर साधु के कन्धे को स्पर्श किया। साधु ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं। राजा ने पूछा, ''हे महात्मन, आशा है, कुटिया आरामदेह होगी।'' साधु ने सत्यभाव से पूछा, ''वत्स, मैं तुम्हें क्या पुरस्कार दूँ?''

''कृपया आशीर्वाद दीजिये कि मुझे एक पुत्र हो जो मेरा उत्तराधिकारी बने!'' राजा ने कहा।

''तुम्हारी इच्छा परमप्रभु ने सुन ली है!'' साधु ने कहा।

अपने कक्ष में जाने के बाद राजा ने अपने
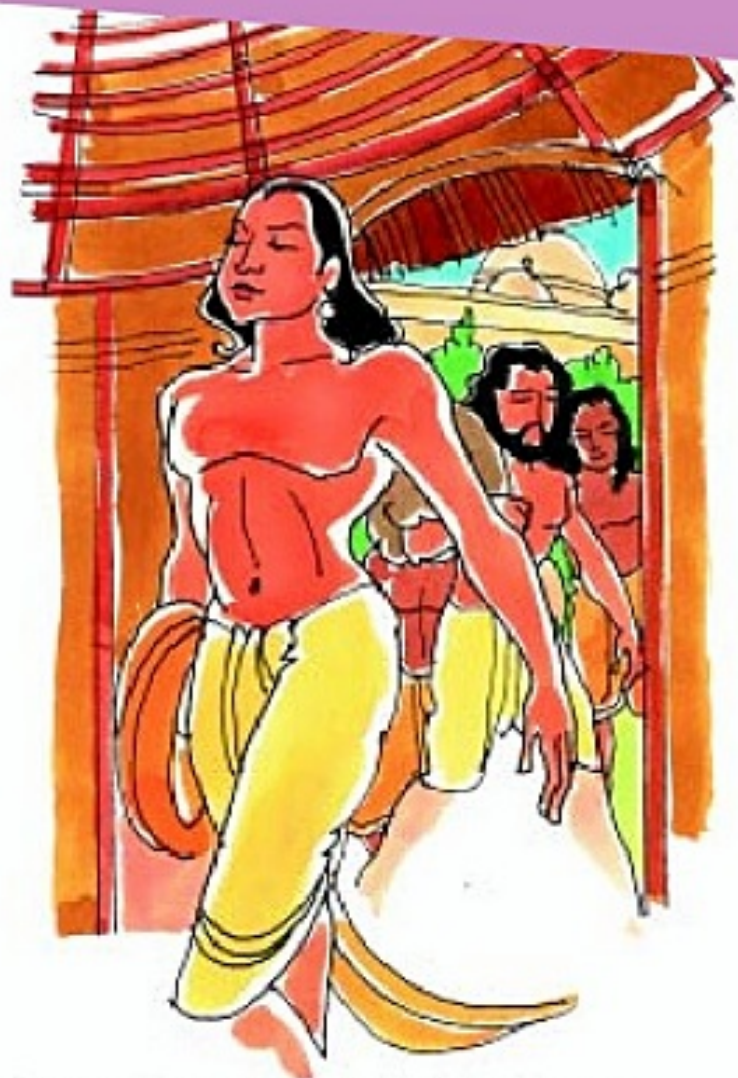
अंगरक्षक को बुलाया और आदेश दिया कि साधु को शाही रसोई खाने से भोजन पहुँचा दो। शाम को राजा को मालूम हुआ कि साधु ने भोजन लौटा दिया है। राजा यह विश्वास करने लगा कि साधु यदि अन्न-जल के बिना रह सकता है तो अवश्य ही उसके पास चामात्कारिक शक्तियाँ होंगी।

जब लोगों को पता चला कि राजा ने साधु के लिए महल के अन्दर कुटिया बना दी है, तब धीरे-धीरे उन्हें पता चला कि वे किसी भी समय साधु के पास प्रणाम करने के लिए जा सकते हैं। जो भी हो, साधु सदा आँखें बन्द किये रहता और किसी के कुछ बोलने पर भी कभी अपना मुँह नहीं खोलता।

एक बार ऐसा हुआ कि राजा की एकमात्र पुत्री ने साधु से मिलना चाहा। राजकुमारी को आशा थी कि साधु अपनी शक्ति से यह बता देगा कि उसका पति कौन होगा। शायद वह उसके होनेवाले पति को अन्तर्दृष्टि में दिखा दे।

राजकुमारी ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में थी जब वह अकेले अपने कक्ष से बाहर जा सके। एक रात को उसकी परिचारिकाएँ अगले दिन के त्योहार के लिए तैयारी में व्यस्त थीं। वह चुपचाप बाहर आ गई और कुटिया की ओर बढ़ी। जब साधु के आमने-सामने खड़ी हुई तो उसके हृदय की धड़कनें तेजी से चलने लगीं। उस समय साधु की आँखें खुली थीं। उसने सिर्फ यही कहा, ''तुम्हारे आने के समय को देखते हुए मैं अनुमान करता हूँ कि तुम महल से आई हो।''

''मैं राजकुमारी मालविका हूँ'', राजकुमारी ने उत्तर दिया।

''मैं गौरवान्वित हुआ। मैं आप को कैसे प्रसन्न करूँ, हे सुन्दरी!''

''मैं एक प्रार्थना लेकर आई हूँ। क्या आप बतायेंगे कि किस राजकुमार से मेरा विवाह होगा? और उस राजकुमार को क्या अपनी अन्तर्दृष्टि से देख सकता हूँ?''

साधु ने आँखें बन्द कर लीं लेकिन कुछ क्षणों के लिए। फिर वह लम्बी मुस्कान के साथ बोला, क्या मैं इतना सुन्दर नहीं हूँ कि तुम्हारा पति बन सकूँ। और जब तुम मुझसे विवाह कर लोगी, तब स्वाभाविक ही मैं राजकुमार बन जाऊँगा।''

साधु ने जब प्यार से राजकुमारी का हाथ पकड़ लिया तब वह भौंचक रह गई। उसने एक महात्मा से ऐसे आचरण की आशा नहीं की थी। क्या उसने उसके आशीर्वाद के लिए आकर मूर्खता की? वह जल्दी से कुटिया के बाहर आ गई।

साधु तब तक अनुरोध करता रहा, ''हे राजकुमारी! मत जाओ! मैं तुम्हें तुमसे विवाह करनेवाले राजकुमार को देखने की अन्तर्दृष्टि प्रदान करूँगा।'' वह उसे भागने से रोकना चाहता था। उसने वहाँ रखे, एक दर्शनार्थी द्वारा लाये गये फलों का ट्रे उठाकर उसके पैर पर फेंककर मारा।

मालविका दरवाजे पर क्षण भर के लिए रुकी। उसे लगा कि किसी चीज से उसे चोट लग गई है। पैर के दर्द की परवाह किये बिना वह बाहर आ गई और शीघ्र ही अपने कमरे में लौट आई। उसने चैन की सांस ली। भगवान को धन्यवाद! किसी ने उसे देखा नहीं। परिचारिकाएँ अभी भी व्यस्त थीं। उसने पाँव को देखा। किसी चीज से कटने का वहाँ गहरा घाव हो गया था और उससे रक्त बह रहा था। उसने जड़ी-बूटी का मरहम लगा दिया और सोने का बहाना बनाकर बिस्तर में लेट गई।

अगले दिन प्रातःकाल जब राजा साधु से मिलने गया तो वह जाग रहा था। वह क्रोधित लग रहा था। ''क्या हुआ, हे महात्मन?'' राजा ने पूछा। कोई उत्तर नहीं मिला। ''क्या यह स्थान आरामदेह नहीं है?''

साधु ने सिर्फ राजा को घूरकर देखा। ''मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ। तुम्हारे राज्य में एक दुष्ट आत्मा आ गई है।'' उसने कहा।

''दुष्ट आत्मा? किस तरह की दुष्ट आत्मा?'' राजा ने पूछा।

''पिछली रात एक सुन्दर लड़की यहाँ आई और उसने मेरा ध्यान भंग कर दिया। मैंने उसे वापस भेज दिया लेकिन उसके पाँव में चोट लग गई है।''

''मैं निश्चय ही पता करूँगा कि वह कौन है और रात में यहाँ आने और आप का ध्यान भंग करने के लिए उसे सजा दूँगा।'' राजा ने महल में लौटने से पहले आश्वासन दिया।

उसने अंगरक्षकों के प्रधान को बुलाया और उसे पता करने के लिए कहा कि पिछली रात महल में कौन आया और क्या वह कोई युवती थी।

प्रधान ने वापस आकर बताया कि साधु के शिष्यों के बाहर जाने के बाद कोई महल में नहीं आया और शिष्य भी तब तक लौट कर नहीं आये थे। तब क्या कोई महल से ही आया होगा? साधु ने बताया कि वह आत्मा सुन्दर लड़की के रूप में आई थी। निस्सन्देह रानी और राजकुमारी की परिचारिकाएँ इस विवरण के अनुसार नहीं हो सकतीं। क्या राजकुमारी साधु के पास गई होगी? क्या उसके पाँव में चोट लगी है?

राजा ने गुप्त रूप में राजकुमारी की दो परिचारिकाओं में से एक को बुलाया और कहा,

और उसके शिष्यों पर कड़ी नजर रखने का आदेश दिया। प्रधान अंगरक्षक के जाने के बाद राजा साधु से मिलने गया। साधु की आँखें बन्द थीं लेकिन कुटिया में किसी आनेवाले के प्रति सतर्क। उसने जैसे ही पदचाप सुने, उसने पूछा, ''कौन है?'' राजा का उत्तर न पाकर साधु ने आँखें खोलीं और वह मुस्कुराया, ''ओह! महाराज!'' राजा ने ध्यान दिया पिछले अवसरों की तरह उसने 'वत्स' कह कर सम्बोधित नहीं किया। ''क्या दुष्टात्मा को पकड़ लिया?''

''नहीं, किन्तु उसे पहचान लिया गया है।'' उसके पाँव में चोट है। चोट ठीक होते ही उसे यहाँ लाकर सजा दी जायेगी।'' राजा ने कहा।

साधु अचानक अशान्त हो गया। उसने शिष्यों को पुकारा। स्पष्ट ही, केवल एक शिष्य मौजूद था। ''मुझे थोड़ा जल ला दो।'' पानी पीने के बाद उसने क्लान्त होने का बहाना दिया, ''महाराज, यदि आप अनुमति दें तो मैं अब विश्राम करूँगा।''

''राजकुमारी को मालिश करते समय क्या तुमने उसके पाँव में कोई जख्म देखा है?''

''हाँ महाराज, हमलोगों ने राजकुमारी के टखने पर जख्म का दाग देखा है और वहाँ पर वह दर्द की शिकायत कर रही थीं। उन्होंने कहा कि वह उद्यान में एक टूटी शाखा पर गिरने से घायल हो गई हैं। किन्तु वह उद्यान में जहाँ-जहाँ गईं, हमलोग हमेशा साथ थीं। हमलोगों ने कोई टूटी टहनी नहीं देखी और उन्हें गिरते हुए भी नहीं देखा।'' परिचारिका ने बताया।

राजा ने तब प्रधान अंगरक्षक को बुलाकर साधु

इससे राजा का सन्देह बढ़ने लगा। लेकिन उन्होंने निश्चय किया कि एक दो दिन के बाद ही अगला कदम उठायेंगे। दूसरे दिन प्रातःकाल प्रधान अंगरक्षक ने बताया कि पिछली रात को साधु भी बाहर गया था और अभी तक लौटा नहीं है। यह कहकर प्रधान चला गया लेकिन तुरन्त लौटकर राजा से बोला, ''साधु अभी-अभी लौट आया, महाराज!'' राजा ने कहा, ''हम लोग अभी उससे मिलने चलेंगे।''

पहले की तरह साधु की आँखें बन्द थीं,

लेकिन राजा के जाते ही उसने आँखें खोल दीं। राजा बिना उसके सम्बोधन की प्रतीक्षा किये बोला, ''ये अगरक्षकों के प्रधान हैं। इन्होंने ख़बर दी है कि वह सुन्दर लड़की, जिसे आपने दुष्टात्मा कहा है, लापता हो गई है। हो सकता है, जब आप पिछली रात बाहर गये थे, यहाँ आ गई हो। इन्हें इस जगह की तलाशी लेने दीजिये जिससे, यदि वह यहाँ हो, तो उसे पकड़ा जा सके। आपके शिष्य कहाँ है, महात्मन?''

''वे मेरे लिए भोजन लाने गये हैं।'' साधु ने कहा। राजा साधु के सामने बैठ गया। राजा का संकेत पाकर प्रधान अन्दर गया। कुछ देर के बाद वह लौट आया। उसके हाथों में सोने के आभूषण और चमकते हुए मूल्यवान रत्न थे। ''महाराज, अन्दर कोई नहीं है, लेकिन ये सब मुझे एक थैले में मिले।'' प्रधान अंगरक्षक ने कहा।

''क्या दुष्टात्मा घायल हो जाने के बाद यह सब छोड़ गई है?'' राजा ने व्यंग्यपूर्वक पूछा।

साधु को कुछ कहने के लिए शब्द नहीं मिला। तब तक उसके तीनों शिष्य भरे हुए थैलों के साथ अन्दर आये। उसके अन्दर की चीजें खाने-पीने लायक नहीं लगती थीं।

राजा अब खड़ा हो गया और प्रधान से बोला, ''कुछ और रक्षकों को बुलाओ।'' उनके आते ही राजा ने चारों को कारागार में डालने और यहाँ की हर चीज को बरामद करने का आदेश दिया।

उन चारों को पकड़ कर जेल में भेज दिया गया और कुटिया में रखे सभी थैलों को राजा के सामने पेश किया गया।

''साधु और इसके शिष्य चोर थे और यह सारा माल लोगों से लूटा हुआ है। यह पता करना चाहिये कि चोरों ने यह माल कहाँ से लूटा है और उन्हें वापस भेज देना चाहिये।''

राजा ने यह सोचकर बुद्धिमानी की कि वह राजकुमारी को यह नहीं बतायेगा कि जिस महात्मा से वह मिलने आई थी वह कपटी साधु था।
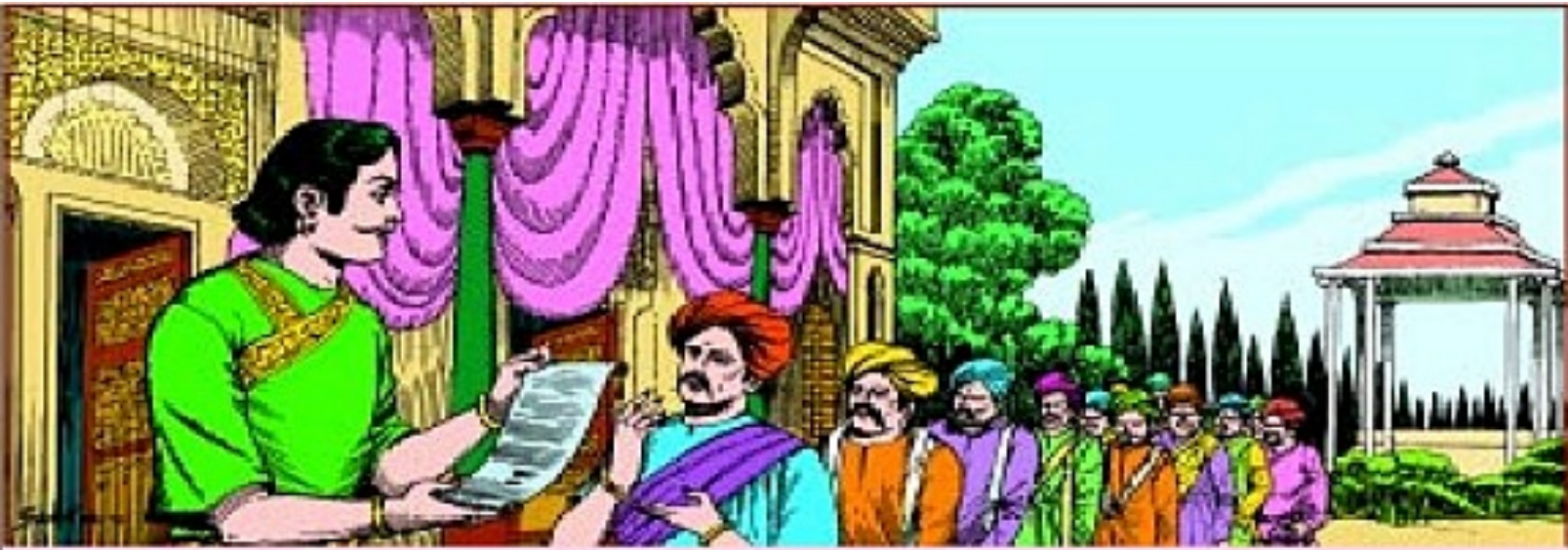
आशा का अंत

प्राचीन काल में काशी राज्य पर राजा ब्रह्मदत्त शासन करते थे। उनके दो पुत्र थे। राजा का अंतिम समय जब निकट आया, तब उन्होंने बड़े राजकुमार को राज्य सौंपकर छोटे राजकुमार को सेनापति के पद पर नियुक्त किया। ब्रह्मदत्त की मृत्यु के बाद बड़े राजकुमार के राज्याभिषेक की तैयारियाँ होने लगीं। उस वक़्त बड़े राजकुमार बैराग्य में आकर बोले, ''मैं यह राज्य नहीं चाहता। छोटे राजकुमार को आप लोग गद्दी पर बिठाइये।''

इसके बाद बड़े राजकुमार काशी राज्य के बाहर एक सामंत राज्य में पहुँचे। वहाँ एक धनवान के घर में मेहनत करते हुए दिन बिताने लगे।

थोड़े दिन बाद काशी राज्य के कुछ अधिकारी जमीन की पैमाइश करके कर लगाने के काम पर उस राज्य में आ पहुँचे। लोगों ने धनवान के घर में रहनेवाले राजकुमार को पहचाना और उनके प्रति श्रद्धा और भक्ति प्रकट की । यह समाचार मिलते ही धनवान बड़े राजकुमार के पास पहुँच कर बोला, ''महानुभाव, आप अपने छोटे भाई को चिट्ठी लिखकर मेरे कर घटाने की कृपा करें।'' राजकुमार ने छोटे राजकुमार के पास चिट्ठी भेजी। उन्होंने बड़े राजकुमार की बात मान ली।

यह ख़बर मिलते ही गाँव के कई लोग राजकुमार के पास पहुँचे और उनसे निवेदन करने लगे कि उनके कर भी घटाने का इंतज़ाम करें। बड़े राजकुमार की सिफारिश पर सब लोगों के कर घटा दिये गये।

उस दिन से गाँव के लोग अपनी जमीन के करों की रक़म लाकर बड़े राजकुमार के हाथ सौंपने लगे। इस कारण बड़े राजकुमार के मन से बैराग्य जाता रहा और राज्य पाने की इच्छा बढ़ने लगी।

इसके बाद वे धीरे-धीरे एक-एक सामंत राज्य पर अधिकार जमाते हुए इसकी सूचना अपने छोटे भाई को देने लगे। फिर भी छोटे भाई

बड़े भाई की हर बात को मानते गये। धीरे-धीरे बड़े राजकुमार के मन में काशी राज्य पर भी क़ब्जा करने का लोभ पैदा हुआ। एक दिन उन्होंने अपने छोटे भाई के पास यह संदेशा भेजा- ''तुम सारा काशी राज्य मुझे सौंपने के लिए तैयार हो या मेरे साथ युद्ध करने के लिए? जल्दी सूचित करो।''

छोटे भाई ने उत्तर भेजा, ''यह राज्य तो आप ही का है। आप इसे जब चाहें तब ले सकते हैं।'' इसके बाद बड़े भाई काशी राज्य की गद्दी पर बैठे और छोटे राजकुमार उनके सेनापति बने।

बड़े राजकुमार इससे भी संतुष्ट नहीं हुए। वे एक-एक कर कई अ नेक राज्यों पर अधिकार करते गये।

एक बार स्वर्ग लोक के राजा इंद्र भूलोक के मामलों पर चर्चा कर रहे थे। उस वक़्त काशी राज्य की चर्चा चल पड़ी। उन्हें लगा कि काशी राज्य के मामले में उपेक्षा करें तो कई राज्यों की हानि हो सकती है। इसलिए इन्द्र ने बड़े राजकुमार को सबक़ सिखाने का निश्चय कर लिया। वे एक युवक के रूप में काशी राजा के दर्शन करने आ पहुँचे। वे बोले, ''महाराज, मैं आपको एक छोटा-सा रहस्य बताने आया हूँ।''

राजा युवक को अपने अंतःपुर में ले गये। युवक ने राजा से कहा, ''राजन, मेरी जानकारी में तीन महानगर हैं। वे नगर न केवल बड़े ही संपन्न हैं, बल्कि उनके पास भारी चतुरंगी सेना भी है। मैं अपनी शक्ति के बल पर उन तीनों नगरों को जीतकर आप को देना चाहता हूँ।'' युवक के

मुँह से यह समाचार सुनते ही काशी राज्य के मन में राज्य-विस्तार का लोभ बढ़ गया। लेकिन इस बीच युवक वेषधारी देवराज इन्द्र अदृश्य हो गये।

राजा ने युवक की खोज की, लेकिन वह कहीं नहीं मिला। इस पर उन्होंने राज्य के प्रमुख अधिकारियों को आदेश दिया, ''अभी अभी जो युवक मेरे पास आया था, उसने मुझेतीन महानगर जीतकर देने का वचन दिया है, तुम लोग शीघ्र उसे ढूँढ़कर मेरे सामने हाज़िर करो।''

राजा के परिचारक और सैनिकों ने युवक की खोज की, मगर कहीं उसका पता न चला। इस पर राजा को लगा कि वे पागल होते जा रहे हैं।

इसी मानसिक चिंता से वे बीमार पड़ गये। वैद्यों ने इलाज किया, पर कोई फ़ायदा न हुआ।

उन्हीं दिनों में समस्त शास्त्रों में प्रवीण बने बोधिसत्व तक्षशिला से काशी लौट आये। राजा

के बीमार हो जाने की ख़बर मिलते ही उन्होंने राजमहल में यह संदेशा भेजा, ''मैं राजा की बीमारी दूर कर सकता हूँ। मुझे मौक़ा दें।''

राजा ने बोधिसत्व को महल के अंदर बुला भेजा। बोधिसत्व ने राजा से पूछा, ''राजन, आप की बीमारी की वजह क्या है?''

इसके जबाब में आवेश में आकर राजा ने उस युवक के द्वारा तीन महानगर जीतकर देने का सारा वृत्तांत सुनाया और बोले, ''उसी समय से यह मानसिक व्याधि मुझे सता रही है। यदि आप इसे दूर कर सकते हैं तो कोशिश कीजिए।''

बोधिसत्व ने राजा से पूछा, ''राजन, अगर आप इस तरह मानसिक व्याधि के शिकार हो जायेंगे तो क्या आप उन तीनों महानगरों को जीत सकते हैं?''

''कभी नहीं।'' राजा ने झट कहा।

''इसलिए आपके द्वारा चिंता करते रहने से कोई फ़ायदा नहीं है। इस दुनिया की हर चीज़ थोड़े दिन बाद हमारी आँखों के सामने ही अदृश्य होती जा रही है न?'' बोधिसत्व ने पूछा।

''हाँ, सच है।'' राजा ने कहा।

''यह भी सत्य है न कि प्रत्येक जीव को अपने प्राणों के निकलते ही इस दुनिया को छोड़ कर जाना पड़ता है। इसलिए हे राजन! तीन क्या, तीस महानगरों को जीतने पर भी आप सुखी नहीं हो सकते। संसार में कोई भी चीज़ शाश्वत नहीं है।

आशा का कोई अंत नहीं है। जब कोई भी मानव आशा के वशीभूत हो जाता है तब उसे मानसिक व्याधि सताने लगती है, इससे पिंड छुड़ाना चाहे तो मन को कामनाओं पर क़ाबू रखना होगा। जैसे चर्मकार जूते के बराबर चमड़े को काटता है, वैसे ही कामनाओं को भी हमें वहीं तक बढ़ने देना है, जहाँ तक वे हमारे लिए उपयोगी हों।'' बोधिसत्व ने समझाया।

बोधिसत्व का यह उपदेश सुनने पर राजा के मन को शांति मिली और उनकी मानसिक व्याधि गायब हो गई। इसके बाद राजा के अनुरोध पर बोधिसत्व ने उन्हें धर्मोपदेश दिया। वे अपने जीवन-पर्यंत राजा का मार्ग-दर्शन करते रहे।

रामायण

लक्ष्मण पति-पत्नी का सम्भाषण सुन रहा था। उसने कहा, "भैय्या, यदि आपने वन जाने का निश्चय कर लिया है तो मैं भी आपके साथ आऊँगा।"

राम ने इसके लिए अनुमति न दी। "यदि तुम और हम चले गये, तो हमारी माताओं को देखनेवाला कोई न रहेगा। तुम उनकी देखभाल के लिए यहीं रहो।"

लक्ष्मण ने यह नहीं माना। उसने कहा, "मैं, दिन रात आपका काम करता रहूँगा। मुझे आपके साथ आना ही होगा।"

राम ने सन्तुष्ट होकर उसका आना स्वीकार कर लिया। लक्ष्मण को उन्होंने वसिष्ठ से दिव्य अस्त्रों को लाने के लिए कहा। उनमें अक्षय तूणीर, भयंकर धनुष, दुर्भेद्य कवच थे। सोने से मढ़ी हुई दो तलवारें थीं। लक्ष्मण ने अपने मित्रों के पास जाकर कहा कि वह वन जा रहा है। उसने वसिष्ठ के यहाँ से अस्त्र लाकर दिये।

फिर राम ने यात्रा दान किये। वसिष्ठ के लड़के सुमंत्र को बुलाकर उसकी पत्नी को सीता से उसके आभूषण, पलंग, गद्दे, दिलवाये और उन्होंने स्वयं शत्रेजप नामक हाथी और अनेक हाथियों को दान दिया।

अगस्त्य, कौशिक आदि ब्राह्मणों को, कौशल्या के पास रहनेवाले एक बूढ़े पंडित को, दशरथ के विश्वासपात्र चित्ररथ सारथी को, ब्रह्मचारियों को असंख्य गौवें, सोना, मणि, और कपड़े दान में दिये।

अयोध्या के पास जंगल में एक बूढ़ा ब्राह्मण रहा करता था। उसका नाम त्रिपक था। उसके

बहुत से बच्चे और जवान पत्नी थी। वह कन्द फल खाकर जीवन निर्वाह कर रहा था।

उसे मालूम हुआ कि राम यात्रा दान कर रहे हैं। वह फटे कपड़े ओढ़कर राम के पास आया। उसने कहा, ''राजपुत्र! मैं गरीब हूँ। मेरे बहुत से बच्चे हैं। माँग कर जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। जरा मुझ पर कृपा करो।''

राम ने कहा, ''तुम एक लाठी जितनी दूर फेंक सको उतनी दूर फेंको। उस फासले में जितनी गौवें आयेंगी मैं उतनी गौवें दे दूँगा।'' बूढ़े त्रिपक ने जब लाठी फेंकी, तो वह सरयू नदी के उस पार गिरी। राम ने त्रिपक का स्नेहवश आलिंगन किया। ''मैंने यूँ ही कहा था। बुरा न मानो। मैंने केवल यह जानना चाहा था कि तुम्हारी तपशक्ति कितनी है। जितनी गौवें देने के लिए कहा था उतनी तो दूँगा ही और भी जो चाहो, माँगो।'' त्रिपक ने राम को आशीर्वाद दिया। गौवों के झुण्ड को अपने आश्रम ले गया। इस प्रकार दान आदि से सबको प्रसन्न करके राम, सीता और लक्ष्मण को साथ लेकर पिता के नगर की ओर गये।

उन तीनों को गलियों में पैदल जाते देख छत पर से देखनेवाले, मकानों में से देखनेवाले क्रुद्ध हो उठे। वे आपस में यों बातें करने लगेः

''देखो भाई, राम, पत्नी और भाई को साथ लेकर कैसे पैदल जा रहे हैं! लगता है, इस दशरथ के सिर पर कोई भूत सवार है। चाहे कोई कितना भी दुष्ट हो, राजा उसे जंगलों में तो नहीं भेजता। अच्छे राम को जंगल में भेज रहे हैं। यदि हम सब अपने परिवारों के साथ राम के साथ निकल पड़ें, तो इनको पता लगेगा।''

नागरिकों की ये बातें सुनते, सीता, राम लक्ष्मण, दशरथ के नगर में पहुँचे। उन्होंने सुमन्त्र द्वारा ख़बर भिजवाई कि वे राजा से मिलने आये हैं। दशरथ ने सुमन्त्र से सीता, राम और लक्ष्मण को बुलाकर लाने के लिए कहा।

जब राम हाथ जोड़कर आये, तो दशरथ और उनकी अन्तःपुर की स्त्रियाँ उठ खड़ी हुईं। दशरथ राम से मिलने गये, और बीच में ही गिर गये। उन्हें उठाकर बिठाया गया।

जब दशरथ को होश आया, तो राम ने कहा, ''महाराज, मैं दण्डकारण्य जा रहा हूँ। आप प्रभु हैं, इसलिए आपकी आज्ञा के लिए आया हूँ। सीता और लक्ष्मण भी साथ आ रहे हैं। मैंने बहुत कहा,

पर उन्होंने न सुनी। उनके बनवास के लिए भी अनुमति दीजिये।''

दशरथ ने राम से कहा, ''बेटा, मैं कैकेयी को बर देकर ठगा गया। तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके पट्टाभिषेक कर लो।''

''आप असत्यभाषण की निन्दा न मोल लीजिये। बन में जाने के लिए मुझे कोई आपत्ति नहीं है। चौदह वर्ष काटकर मैं फिर आपके पास आऊँगा।''

''आज ही क्या तुम्हें जाना है? आज रात यहाँ रहो। जो कुछ हमसे करवाना है, वह करवा लो। एक दिन यहाँ रहो। फिर सवेरे उठकर तुम जंगल में जा सकते हो।'' दशरथ ने कहा।

''पिता जी, आप यही समझ लीजिये कि आपने हमारी सब इच्छाएँ पूरी कर दी हैं। आप हमें आशीर्वाद देकर भेज दीजिये। बन में हमें कोई कठिनाई न होगी। हम बहुत से पहाड़ और झीलें देखेंगे।'' राम ने कहा।

राम को बन में जाता हुआ और दशरथ को दुखी होता देख सुमन्त्र को बड़ा गुस्सा आया। उसकी आँखें अंगारें उगलने लगीं। वह दाँत पीसने लगा। उसने कैकेयी से कहा, ''दुष्टा कहीं की, तुमने उसी राजा को इतना दुख दिया है, जो तुम्हें अपने प्राणों से भी अधिक चाहता था। अब तुम और क्या कर सकती हो? तुम्हें देखकर तो ऐसा लगता है कि तुम पति का नाश करके ही रहोगी। इस बंश का भी नाश करके रहोगी। सबसे बड़े लड़के राम के पट्टाभिषेक पर तुम्हें क्या आपत्ति
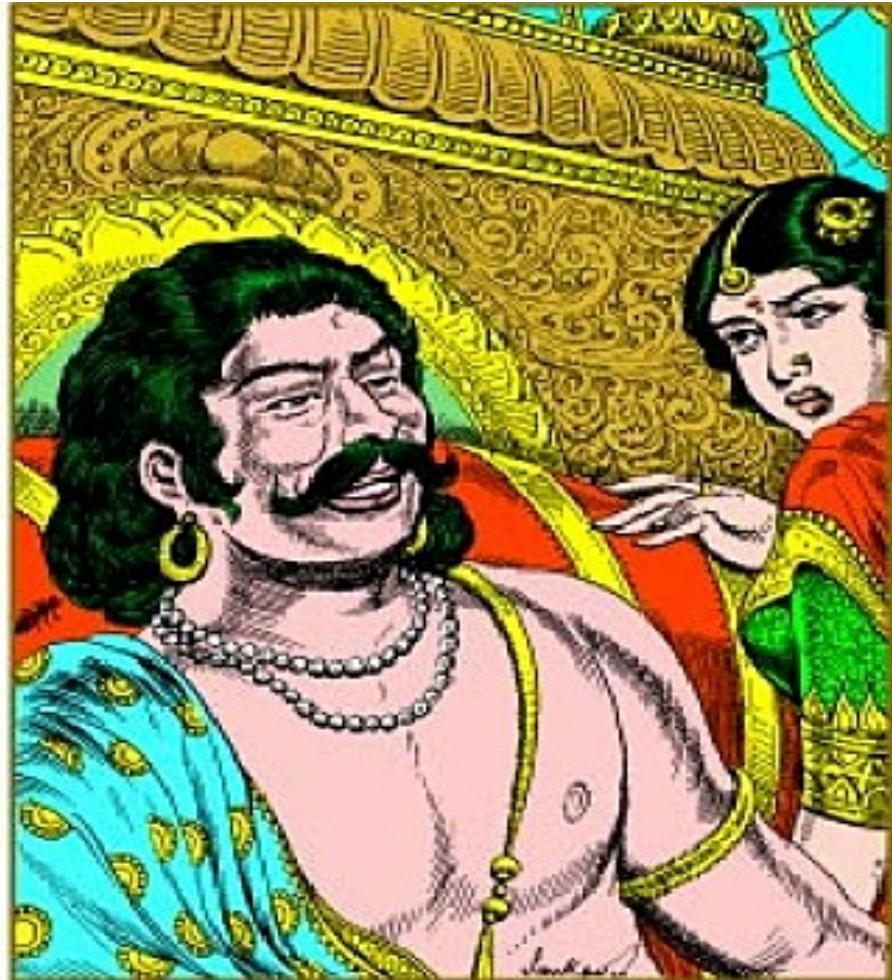
है? यदि भरत राज्य करेगा, तो तुम सोचती हो कि हम यहाँ रहेंगे? अयोध्या में क्या एक ब्राह्मण भी रहेगा? क्यों यह गन्दा काम कर रही हो? आखिर तुम अपनी माँ की बेटी कहलायी। तुम्हारे पिता अश्वपति ने एक मुनीश्वर से अपूर्व शक्ति पायी थी। उससे उन्होंने पशु और पक्षियों की भाषायें सीख लीं।

जब वह एक बार पलंग पर लेटा हुआ था, तो जृम्भ नाम की चींटी ने जब कुछ कहा, तो वह हँस पड़ा। यह देख तुम्हारी माँ ने हँसी का कारण पूछा।

तुम्हारे पिता ने कहा कि यदि मैंने बताया कि मैं क्यों हँसा था, तो मैं मर जाऊँगा। ''तुम मरो या जीओ। तुम मुझे देखकर नहीं हँसे, यह मैं कैसे जानूँ? इसलिए, मुझे हँसने का कारण बताना ही

माल के साथ व्यापारियों को भेजो। साथ गाड़ियाँ भी भेजो। राम को राज्य के न होने की कमी न अनुभव हो।''

सुमन्त्र के शाप को सुनकर जो टस से मस न हुई थी ऐसी कैकेयी, यह सुन सन्न हो गई। डर गई। उसने कहा, "महाराज, यदि ये सब अयोध्या छोड़कर चले गये तो भरत राज्य नहीं करेगा।''

"अरे, दुष्टा! मुझ पर इतना मार तो डाला ही, अब बातों के कोड़े भी लगा रही हो। यह सब उन बरों के साथ ही माँग लेती।'' दशरथ ने क्रुद्ध होकर कहा।

कैकेयी ने उससे भी अधिक क्रुद्ध होकर पूछा, "क्या यह सब मुझे अलग माँगना चाहिए था? बन में जाने का अर्थ ही है कि सब छोड़कर जाना। आपके पूर्वज सगर ने जब अपने लड़के असभेज को भेजा था, तो क्या उसके साथ सेना भी भेजी थी ?''

होगा।'' तुम्हारी माँ ने हठ किया। तब तुम्हारे पिता ने उस मुनि के पास जाकर सलाह माँगी जिसने बर दिया था। "चाहे तुम्हारी पत्नी हठ करते-करते मर जाये। तो भी हँसने का कारण न बताओ, मुनि ने सलाह दी। तब तुम्हारे पिता ने तुम्हारी माता को भेज दिया। और सुख से रहने लगा। तुम्हारा काम भी कुछ ऐसा ही मालूम होता है। जब राम पिता को छोड़कर बन चल जायेगा तो बड़ी आपत्ति आकर रहेगी। इसलिए तुम अपना हठ छोड़ो। और राम के पट्टाभिषेक के लिए मान जाओ।''

यह सुन कैकेयी का लज्जित होना तो अलग उसने सुमन्त्र का कहना अनसुना कर दिया। दशरथ ने सुमन्त्र से कहा, "राम के साथ जंगल में चारों सेनाएँ, विपुल धनराशि, सुन्दर स्त्रियाँ और

यह सुन सिद्धार्थ नाम के मन्त्री ने कहा, "क्यों आप असभेज की बात यहाँ लाती हैं? बह परम दुष्ट था। वह गलियों में खेलते बच्चों को उठा ले जाता और सरयू नदी में फेंककर उनको मरता देख खुश हुआ करता था। इसलिए नागरिकों ने जाकर राजा से कहा, "आप या तो असभेज को बन में भेजते हैं या हमें नगर छोड़कर जाने के लिए कहते हैं? तब महाराजा ने अपने जनद्रोही लड़के और उसकी पत्नी को और उसके नौकर चाकरों को राज्य से बाहर भेज दिया और प्रबन्ध कर दिया कि वे फिर कभी राज्य में कदम न रखें। जन

द्रोही असभेज और जन प्रिय राम की कैसे तुलना की जा सकती है?''

इन बातों का कैकेयी पर कोई प्रभाव न हुआ। तब दशरथ ने कहा, ''भले की बात तुम्हारे सिर में नहीं घुसेगी। मैं भी राम के साथ वन में जाऊँगा। तुम और भरत सुख से राज्य करो।''

राम यह सब सम्भाषण सुन रहे थे। उन्होंने पिता से कहा, ''महाराज, जब मैं सब सुख छोड़कर जंगलों में कन्द मूल खाकर रहनेवाला हूँ तब मुझे सेना की क्या आवश्यकता है? हाथी का दान करके सूत के बारे में कंजूसी की बात छोड़ दीजिये। हमें वल्कल वस्त्र और कन्द मूल उखाड़ने के उपकरण और एक टोकरा दिलवा दीजिये। बस, काफ़ी है।''

कैकेयी तो मान मर्यादा कभी का छोड़ चुकी थी। उसने कहा, ''लो अभी लाई, बल्कल वस्त्र।'' राम, लक्ष्मण ने अपने अच्छे वस्त्र उतार दिये और पिता के सामने बल्कल वस्त्र पहन लिये। पर सीता न जान सकी कि उनको कैसे पहना जाये। उसने राम की ओर देखा। फिर एक कपड़ा गले में लपेटकर, और दूसरा हाथ में रखकर, शर्माती, नीचे मुँह करके खड़ी हो गई। तब राम उसके पास गये। उसके हाथ से बल्कल वस्त्र लेकर उसकी रेशमी साड़ी के ऊपर उसे पहना दिया।

यह सुन दशरथ की स्त्रियों ने आँसू बहाते हुए कहा, ''बेटा, तुम पिता के वचन के अनुसार जंगल में जा रहे हो। परन्तु सीता को क्यों ले जा रहे हो? वह बनवास नहीं कर सकती। हमारे पास उसे

छोड़ दो। तुम्हारे बदले हम उसे देखते रहेंगी।''

इस बीच बसिष्ठ ने कैकेयी से, जो तब सीता को बल्कल वस्त्र दे रही थी, कहा, ''गुणही ना! तुम्हारे दुस्साहस की सीमा ही नहीं मालूम होती है। सीता को वन में जाने की क्या आवश्यकता है?

''राम के लिए जिस पट्टाभिषेक की व्यवस्था की गई थी, उसी व्यवस्था से जानती हो, सीता का पट्टाभिषेक किया जा सकता है? सीता को बल्कल वस्त्र पहनने की आवश्यकता नहीं है। यही नहीं, वह अपने साथ वाहन, वस्तुएँ, वस्त्र, परिचारिकाएँ सब ले जा सकती है। तुम सोच रही हो कि भरत यह सब देखक र खुश होगा? तुम्हारा दुष्टतापूर्ण व्यवहार उसे बिलकुल पसन्द न आयेगा। यदि वह अपने पिता का लड़का है,

तो वह राम को बनवास के लिए जाता देख, पिता का व्यथित होना नहीं देखेगा।''

दशरथ ने सुना कि आस पास के लोग छी छी कर रहे हैं। उन्होंने सीता को देखकर कहा, ''सुकुमारी है, छोटी उम्र की है। सीता, मुनि पत्नी की तरह वल्कल वस्त्र पहनकर किस तरह सोह रही है। वह वल्कल वस्त्र नहीं पहनेगी।''

राम ने पिता से कहा कि वे उनकी माता, कौशल्या की रक्षा करें। दशरथ ने सुमन्त्र से कहा, ''अच्छे घोड़ोंवाले, अच्छे रथ में इन्हें बिठाकर नगर से बाहर अरण्य में छोड़ आओ।'' कोशाधिकारी को बुलाकर कहा, ''इतनी साड़ियाँ और आभूषण लाओ कि वे सीता के लिए चौदह वर्ष तक काफ़ी हों।''

सीता अपने को इस तरह अलंकृत करने लगी जैसे विवाह के लिए जारही हो। यह देख कौशल्या ने उसका आलिंगन कर लिया। ''सीता, तुम्हारा पति गरीब हो गया है। वन में उसकि देख भाल में लापरवाही न करना।'' उसने सीता को समझाया।

राम ने माता-पिता की प्रदक्षिणा करके नमस्कार किया। माता से उसने कहा, ''माँ, शोक न करो, पिताजी की परवाह करो। चौदह वर्ष बीतते कितना समय लगता है? आँख बन्द करके, खोलेंगे कि नहीं इतने में चौदह साल हरिण हो जायेंगे। लक्ष्मण ने भी माँ-बाप को नमस्कार किया। फिर अपनी माता सुमित्रा के पास जाकर उससे विदा ली। उसने लक्ष्मण से कहा, ''लक्ष्मण, अब राम ही तुम्हारा पिता है। सी ता तुम्हारी माता है। अरण्य ही अयोध्या है। देखना कि भाई पर कोई आपत्ति न आये।''

तीनों बाहर आये। सीता ने तो इस तरह कपड़े पहन रखे थे जैसे वह दुल्हिन हो। वह पहले पहल जाकर रथ में बैठगई, जैसे बनवास की कोई चिन्ता ही न हो। फिर राम-लक्ष्मण रथ में जा बैठे। सुमंत्र ने रथ में, दशरथ के दिये हुए वस्त्र, आभूषण आयुध, कवच, फावड़ा और टोकरे आदि रख दिये। तब रथ हिला।

देखनेवाले सभी नर-नारियों की आँखों में आँसू उमड़ आये। लेकिन राम, सीता और लक्ष्मण को बनवास जाने का कोई शोक न था।

जुड़वीं राजकुमारियाँ

कर्मपुर के राजा बोपदेव के केवल दो पुत्रियाँ थीं, दोनों जुड़वीं राजकुमारियाँ थीं। उनमें से एक गोरी थी जिसका नाम श्वेता था। दूसरी लड़की काली थी, उसका नाम कृष्णा था। रंग में अंतर होने पर भी दोनों की रूप-रेखाएँ समान थीं। दोनों लाड़-प्यार में पलीं, धीरे-धीरे दस वर्ष की हो गईं।

एक दिन श्वेता उद्यान में टहल रही थी, तब एक पेड़ पर से पक्षियों का एक घोंसला नीचे आ गिरा। दोनों कन्याएँ डर कर ज़ोर-शोर से रोने लगीं। उनका रोना सुनकर परिचारिकाएँ दौड़ी दौड़ी आ गईं। उन लोगों ने पक्षियों का घोंसला देखा। उसमें दो अण्डे थे। परिचारिकाओं ने अण्डों सहित उस घोंसले को चमेली के पौधों की झाड़ी में फेंक दिया और राजकुमारियों को साथ लेकर राजमहल के भीतर चली गईं। मगर डरने की वजह से राजकुमारियाँ बुखार का शिकार हो गईं। इलाज कराने पर भी बुखार नहीं उतरा।

एक दिन रात को राजा ने एक विचित्र सपना देखा। उस सपने में राजा ने पाँच रंगोंवाले एक पक्षी को देखा। उस पक्षी ने मानव की बोली में राजा से यों कहाः

''राजन! मैं देव पक्षी हूँ। मैंने आप के बगीचे में एक पेड़ पर घोंसला बनाकर उसमें दो अण्डे दिये। उन्हें सेंककर उन पक्षियों को मैंने आप की राजकुमारियों को भेंट करना चाहा। मगर आप की मूर्ख परिचारिकाओं ने उन अण्डों को चमेली की झाड़ियों में फेंक दिया है।''

'मैं अभी उन अण्डों को ढूँढवाकर मँगवा देता हूँ।'' राजा ने जवाब दिया।

''अब यह संभव नहीं है। उन अण्डों का फूटना तथा उनमें से बच्चों का उड़ जाना एक साथ हो गया है। वे दोनों छोटे पक्षी इस वक़्त आप के राज्य के पश्चिमी पहाड़ की चोटी पर हैं। तुम खुद उस चोटी पर चढ़ जाओ, उन

पक्षियों को लाकर उन्हें स्वादिष्ट खाना खिलाओ। यदि वे प्रसन्न हो गये तो तुम्हें दो अण्डे देंगे। पाँच साल बाद वे अण्डे रत्नों में बदल जायेंगे। उन पक्षियों को वापस लाते ही तुम्हारी लड़कियों का बुखार जाता रहेगा।'' पक्षी ने कहा।

''उस पहाड़ की चोटी सीधा है। उस पर चढ़ना असंभव है। आज तक कोई भी उस चोटी पर चढ़ा न होगा।'' राजा ने उत्तर दिया।

''मैं यह नहीं जानता कि तुम उस पर कैसे चढ़ पाओगे? मगर यह बात सच है कि तुम जब तक उन पक्षियों को न लाओगे, तब तक तुम्हारी लड़कियों का बुखार नहीं उतरेगा! सुनो, एक बात और है। अण्डे जब रत्नों में बदल जायेंगे, तब उनमें से एक सफ़ेद होगा, दूसरा गुलाबी रंग का होगा। श्वेता नामक लड़की को गुलाबी रंग के रत्न को हाथ में लेना होगा। कृष्णा सफ़ेद हीरे को ले। ऐसा न हो तो दोनों के लिए ख़तरा पैदा होगा।'' यों समझाकर पक्षी गायब हो गया।

राजा बोपदेव नींद से जाग पड़ा। रानी को अपने सपने का वृत्तांत बताया।

दूसरे दिन प्रातःकाल राजा ने अपने मंत्रियों को बुला भेजा, उनके सामने सपने का वृत्तांत रखा। पर मंत्री कोई सलाह दे न पाये। इस पर राजा ने मंदिर में जाकर भगवान से प्रार्थना की।

अचानक भगवान की मूर्ति के नीचे से एक गोह बाहर आयी, दीवार पर रेंगकर, पुनः उतर आयी और राजा के निकट आकर खड़ी हो गयी।

इस पर राज पुरोहित ने कहा, ''महाराज, भगवान ने आप के प्रति अनुग्रह करके आप की सहायता के लिए गोह को भेज दिया है।''

''यह मेरी सहायता कैसे कर सकेगी?'' राजा ने पूछा।

''उसी ने स्वयं मार्ग दिखाया! दुर्ग की दीवारों को पार करने में गोह से बढ़कर कोई दूसरा प्राणी काम नहीं दे सकता। उसकी पकड़ अनुपम होती है। उसकी कमर में रस्सी बांधकर पहाड़ की चोटी पर भेज दें, तो आप उस रस्सी को पकड़ कर निर्भय ऊपर चढ़ सकते हैं।''

राज पुरोहित ने युक्ति बताई। फिर भी सुरक्षा की दृष्टि से चोटी के नीचे मज़बूत जाल बिछाये गये ताकि राजा के गिरने पर चोट न आवे। गोह को शक्तिशाली भोजन खिलाया गया। एक दिन सवेरे राजा अपनी तलवार, खाना तथा पानी लेकर

पहाड़ की ओर चल पड़ा। गोह की कमर में हल्की व मजबूत रस्सी बांध दी गई और उसको पहाड़ की चोटी पर भेज दिया गया।

उसके ऊपर पहुँचते ही दो सैनिकों ने रस्से को खींचकर पकड़ा, झट गोह चट्टान से चिपक गई, दो व्यक्तियों ने रस्सी पकड़ कर खींचा, फिर भी गोह ने अपनी पकड़ ढीली नहीं की। इसके बाद राजा भगवान का स्मरण कर उस रस्सी को पकड़ ऊपर चढ़ गया।

नीचे राजा का परिवार और रानी डरते हुए खड़े रहे।

राजा जब चोटी पर पहुँचा तब सूर्यास्त हो रहा था, फिर चन्द्रमा निकल आया। राजा ने रस्सी को गोह की कमर से खोल दिया और उसकी एक छोर को एक मजबूत चट्टान सेबांध दिया। चांदनी में राजा को एक नाटा पेड़ दिखाई दिया। उसके निकट जाने पर पेड़ पर दो पक्षी दिखाई दिये। उस पेड़ के तने से दो सिरोंवाला एक सर्प लिपटा हुआ था। राजा को देखते ही अपने दोनों फणों को फैलाये मुँह खोले वह सर्प आगे बढ़ा। राजा ने एक ही वार से साँप को मार डाला। साँप नीचे गिर गया।

बोपदेव जब पक्षियों तथा गोह को लेकर चोटी से उतर कर नीचे आया, तब तक सवेरा होने को था। गोह को नीचे उतारते ही विचित्र ढंग से उसने अपने पंख फैलाये और आसमान में उड़ गया।

पक्षियों के साथ राजा के महल में प्रवेश करते

ही राजकुमारियों का बुखार उतर गया। दूसरे दिन पक्षियों ने दो अण्डे दिये और गायब हो गये।

राजा ने उन अण्डों को एक चांदी की टोकरी में रखवाकर लोहे की पेटी में बंद किया।

क्रमशः पाँच साल बीत गये। श्वेता और कृष्णा पंद्रह साल की हो गईं। राजा ने लोहे की पेटी खोलकर देखा तो उसमें से कांति की किरणें फूट पड़ीं। अण्डों की जगह दो रत्न चमक रहे थे। एक सफ़ेद था और दूसरा गुलाबी रंग का रत्न था।

राजा ने जिस वक़्त उन्हें बाहर निकलवाया, उस वक्त राजकुमारियाँ भी वहाँ पर उपस्थित थीं।

राजा ने अपनी पुत्रियों से कहा, "बेटियो, ये रत्न तुम्हीं लोगों के लिए हैं। इनसे तुम्हारी क़िस्मत

खुल जाएगी। तुम यह चिंता न करो कि कौन-सा रत्न किसका है। आज शाम को तुम दोनों को सफ़ेद चंपा के फूल सुराही में रखकर दूँगा। तुम रोज उन फूलों का परिशीलन करते जाओगी तो तुम्हें ख़ुद मालूम हो जाएगा कि उन में से कौन सा रत्न किसका है?''

उसी दिन राजा ने दरबारी जादूगर मायापाल को गुप्त रूप से अपने रहस्य कक्ष में बुला भेजा और कहा, ''मायापाल! रत्न आ गये हैं, अब तुम्हें अपने जादू का प्रयोग करना होगा।''

''महाराज!'' यह कार्य भी आप ही कर सकते हैं न? यह कोई कठिन कार्य थोड़े ही है? श्वेता को दिये जानेवाले सफ़ेद चंपा के पुष्प-पात्र में थोड़ी लाल स्याही मिलाकर इस तरह बिठ इए जिससे फूल की नली उसमें डूबी रहे।

धीरे-धीरे पुष्प की पंखुड़ियाँ अपने आप गुलाबी रंग में बदल जायेंगी। प्रयोग की यह विधि मैंने आप को पहले ही बता दी है।'' मायापाल ने समझाया।

''तुमने तो बताया है, फिर भी यह का र्य तुम्हारे हाथों द्वारा हो जाये तो अच्छा होगा।'' राजा ने कहा। इस पर दोनों हँस पड़े।

उस दिन रात को श्वेता तथा कृष्णा को दो गुच्छे सफ़ेद चंपा के फूल पात्रों के साथ प्राप्त हुए। पात्रों पर दोनों के नाम स्पष्ट रूप से अंकित थे। दोनों ने उन पात्रों को अपने-अपने कमरों में रख लिया और पुष्पों की निगरानी करती रहीं। कृष्णा को जो फूल दिये गये, वे पहले ही जैसे सफ़ेद रह गये, लेकिन श्वेता को दिये गये फूल दूसरे दिन से अपने रंग बदलने लगे। और अन्त में गुलाबी हो गये।

यह ख़बर मालूम होते ही राजा बोपदेव बहुत प्रसन्न हुआ और बड़ी शीघ्रता से अपनी पुत्रियों के यहाँ गया और पूछा, ''बेटियो, अब तुम्हें मालूम हो गया है न कि कौन-सा रत्न किसका है?'' इन शब्दों के साथ राजा ने थाली में स्थित रत्न दिखाये। श्वेता ने गुलाबी रंग के रत्न को अपने हाथ में लिया तो कृष्णा ने सफ़ेद रत्न को।

अब मायापाल की बात रही। राजा से उसको बढ़िया पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अपराजेय गरुड़
वज्रपुरी का प्रधान मंत्री पुष्पराज नरेन्द्रदेव और रवीन्द्रदेव से भेंट करता है। वह सब तरह से सहायता देने का विश्वास दिलाता है। चन्द्रपुरी में, विक्रमसिंह राजा महेन्द्रवर्मा से कहता है कि वह नरेन्द्रदेव का बहुत ऋणी है।
उसने मेरे प्राण बचाये थे। वह आप के विरुद्ध षड्यंत्र कैसे रच सकता था?
मेरा साला होने के नाते मैंने उससे स्वामी भक्ति की आशा की थी। लेकिन वह अतिमहत्वाकांक्षी हो गया।
क्या उसे क्षमा कर देने का कोई मार्ग है, महाराज?
मैं कैसे विश्वास करूँ कि वह और उसका बेटा पुनः मेरे विरुद्ध षड्यंत्र नहीं रचेंगे? अच्छ ! तो आप लम्बी यात्रा में थक गये होंगे?
रामसिंह, विक्रमसिंह को उनके आवास कक्ष में ले जाओ।
रामसिंह वापस आता है।
महाराज, मैंने कुछ सुना है ...
वह क्या है, रामसिंह?
...कि राजा के आदमी पर्वत की गुफाओं के बारे में पूछताछ कर रहे थे। मुझे लगता है कि वे जानते हैं कि नरेन्द्रदेव वहाँ है।

तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?

तब मुझे मालूम नहीं था, महाराज! क्या मैं इसके बारे में आदित्य को बता दूँ?

नहीं, अभी उसका ध्यान बँटना नहीं चाहिये। अंगरक्षकों को बता दो कि वे राजा और उसके आदमियों पर, जब वे बाहर जायें, नजर रखें।

मैं समझ गया महाराज।

जब रवीन्द्रदेव पुष्पराज को गुफा के बाहर तक छोड़ने जाता है, तब वे एक आवाज़ सुनते हैं... ***रुक जाओ !***

वे पीछे मुड़ते हैं और देखते हैं कि एक आदिवासी कन्या के साथ आम पुरुष खड़ा है।

गुफा के मन्दिर में विचित्र घटना घटी। पूर्णिमा होने के कारण वहाँ कुछ भक्त आये हुए थे...

आदित्य का विवाह नहीं होना चाहिये। वह मेरी योजनाओं में बाधक बन जायेगा।

विवाह नरेन्द्रदेव द्वारा मेरी शक्तियों को ग्रहण करने में बाधा बन जायेगा! जब तक वह अपने अंगों को पुनः प्राप्त नहीं कर लेता, विवाह नहीं होना चाहिये। तब वह चन्द्रपुरी वापस जायेगा।
इस औरत को मेरी शक्तियाँ प्राप्त हैं। वह मेरे उद्देश्य को पूरा करेगी। इसे चन्द्रपुरी ले जाओ!
आप मुझसे अब क्या करवाना चाहते हैं? कृपया बताइये।
तुम चन्द्रपुरी में प्रवेश नहीं कर सकते, लेकिन हमारे ये मित्र कर सकते हैं और उन पर कोई सन्देह नहीं करेगा।
मेरे मित्र, तुम्हारे पिता के लिए मैं यह मदद कर देता हूँ।

मेरे पाँव जम जाने के बाद मैं तुम्हारे राजा को चन्द्रपुरी पर अधिकार करने में मदद करूँगा।
चिन्ता न करो, मेरे मित्र।
उसे दूसरे घोड़े पर मेरे पीछे चलने के लिए कहो। मैं राजा को हमारी मुलाकात के बारे में बता दूँगा।
चलो! चल चलें और अपने पिता को इस अप्रत्याशित घटनाक्रम के बारे में बता दो। उसे प्रसन्नता होगी।
चन्द्रपुरी में...
मैं वज्रपुरी का प्रधान मंत्री हूँ। मेरे राजा विवाह और राज्याभिषेक उत्सव में भाग लेने के लिए यहीं हैं। यह औरत रानी की दासी है।
चन्द्रपुरी में आप का स्वागत है, महानुभाव! आप दोनों कृपया अन्दर जा सकते हैं। हमलोग आप के अश्वों की देखभाल करेंगे।
किसी को मालूम नहीं होना चाहिये कि मैंने तुम्हें यहाँ लाया है। मेरी शुभ-कामना तुम्हारे साथ है।
क्या आप मुझे वज्रपुरी के राजा विक्रमसिंह के पास ले चलेंगे? कृपया उनका आवास कक्ष दिखा दीजिये।
अवश्य, महानुभाव!
इस ओर, कृपया।
क्रमशः

एक मेला और त्योहार

तरनेतर मेला गुजरात के प्रमुख त्योहारों में से एक है। यह तीन दिवसीय मेला आम तौर पर अगस्त-सितम्बर में लगता है। राजकोट के निकट तरनेतर त्रिनेत्रेश्वर अथवा तीन नेत्र वाले देवता-शिव के मन्दिर के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि भगवान ब्रह्मा शिव की आराधना करते समय पुष्पार्पण करने लगे। वे एक सहस्त्र पुष्प अर्पित करना चाहते थे, लेकिन एक पुष्प की कमी हो गई। तब उन्होंने अपना 'नेत्र-कमल' शिव को अर्पित कर दिया। शिव ने ब्रह्मा जी की आँख स्वीकार कर ली जो उनका तृतीय नेत्र बन गई। इस तरह वे त्रिनेत्रेश्वर कहलाये। ब्रह्मा ने शिव की पूजा के लिए तरनेतर स्थान को चुना था।

मन्दिर में त्योहार के उत्सव के समय ही मेला लगता है। मान्यता के अनुसार उसी स्थान पर पाण्डव राजकुमार अर्जुन ने धनुर्विद्या प्रतियोगिता में द्रौपदी का हाथ भी जीता था। तीर्थयात्री मन्दिर के अन्दर के सरोवर में डुबकी लगाना नहीं भूलते, जहाँ मेले के समय पूर्णिमा के दिन स्नान करने पर गंगा स्नान का पुण्य प्राप्त होता है। मेले के दौरान एक विस्मयकारी लोक नृत्य 'रसदा' का आयोजन किया जाता है जिसमें सैकड़ों महिलाएँ एक विशाल वृत में बड़े ही मनोहारी लय में गति करती हैं।

मेले के मैदान में शीशे की जटिल बेलबूटी से अंलकृत तरनेतर छत्रियाँ छितराई मिलेंगी। ये भीड़ की अविवाहित स्त्रियों को आकर्षित करती हैं, क्योंकि इन छत्रियों के नीचे दुल्हिन की खोज करनेवाले अविवाहित पुरुष बैठे मिलेंगे। इसे देख स्वयं वर की प्राचीन प्रथा की स्मृति ताजी हो जाती है।

संक्षेप में, तरनेतर गुजरात की लोक संस्कृति और पर्वोत्सव की परम्पराओं का एक नमूना पेश करता है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

तीन हजार साल पहले का जीवन

ओलमेक सभ्यता, जो मैक्सिकन क्षेत्र में ईसा पूर्व ९०० ईसवी और ३०० ईसवी के बीच विकसित हुई थी, बहुत उन्नत थी। उनकी मूर्तिकला को देख इतिहासकार और पुरातत्वज्ञ विस्मित हैं। उन्होंने विशालकाय सिरों की प्रतिमा बनाई जिनका वजन ४४ टन था और विश्वास किया जाता है कि वे कोई लोकप्रिय खेल के खिलाड़ियों के द्योतक थे।

सिरों की प्रतिमाओं पर आजकल के अमरीकी फुटबॉल खिलाड़ियों द्वारा जैसे प्रयुक्त किये जाते हैं वैसे हेलमेट्स बने हुए हैं। ये अवश्य ही उस द्रुत राष्ट्रीय बॉल खेल के खिलाड़ियों के लिए सुरक्षात्मक आवरण रहे होंगे, जिसके लिए ओलमेक्स प्रसिद्ध माने जाते हैं। लेकिन इस प्राचीन खेल की सबसे चित्ताकर्षक वस्तु हेलमेट नहीं है, बल्कि उनके द्वारा प्रयुक्त बॉल है। यह रबर का बहुत बड़ा बॉल था जिसका रबर हिविया वृक्ष से बनता था। बाद के वर्षों में इस रबर का प्रयोग वस्त्रों में भी होने लगा तथा शल्यचिकित्सकों द्वारा टूटी हड्डियों को ठीक करने के लिए प्लास्टर बनाने में किया जाने लगा।

वैज्ञानिकों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कैसे प्राचीन ओलमेक्स ने न केवल रबर को गढ़ने की प्रविधि की खोज की, बल्कि अनेक उत्तम उपयोगों में इसका इस्तेमाल किया।

तुम्हारा प्रतिवेश

सर्वतोमुखी लॉयनफिश

लॉयनफिश ने, जो विश्व भर में उष्ण कटिबन्धीय, उप-उष्णकटिबन्धीय तथा शीतोष्ण समुद्रों में पाये जाते हैं, हाल में अपनी ओर लोगों का बहुत ध्यान खींचा है। यह उसके फिन्स में मौजूद उस विष के कारण हुआ है जिसे सम्भवतः एक दवा विशेष का विकल्प बनाया जा सकता है।

इस मछली में शरीर के तीन ओर अनेक भिन्न-भिन्न प्रकार के फिन्स हैं। इसकी मेरुदण्डीय फिन्स में विष ग्रन्थि है जिससे जख्म हो सकते हैं और उल्टी हो सकती है और इसके डंक से पीड़ित कभी-कभी मौत का भी शिकार हो सकता है। इसी विष पर शोधकर्त्ता अभी काम कर रहे हैं।

औषधीय महत्व के अतिरिक्त, इस मीनकी, एक्वैरियम्स में सजावटी मछली के रूप में रखने के लिए, बहुत माँग हो रही है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

सितारों की मौत

रात में आसमान की सुन्दरता उन जगमगाते पिण्डों के कारण, जिन्हें हम सितारे कहते हैं, अनेक गुना बढ़ जाती है। कुछ सितारे बहुत चमकीले होते हैं परन्तु धरती से अत्यधिक दूरी के कारण उतने चमकीले दिखाई नहीं पड़ते।

दिलचस्प बात यह है कि सितारे हम मानवों के समान मरणशील हैं। यानी वे भी एक दिन मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं। एक सितारे का जीवनकाल कैसे निर्धारित होता है? वास्तव में दो बातों पर विचार किया जाता है। प्रथम चमक और दूसरा वजन। सितारा जितना चमकीला होगा, जीवन की अवधि उतनी ही कम होगी, क्योंकि यह उस गति का सूचक है जिससे वह ज्वलित हो रहा है।

सितारा जितना भारी होगा, उसका जीवन काल उतना ही कम होगा। हल्के वजन का सितारा पाँच मिलियन वर्षों तक जीवित रह सकता है।
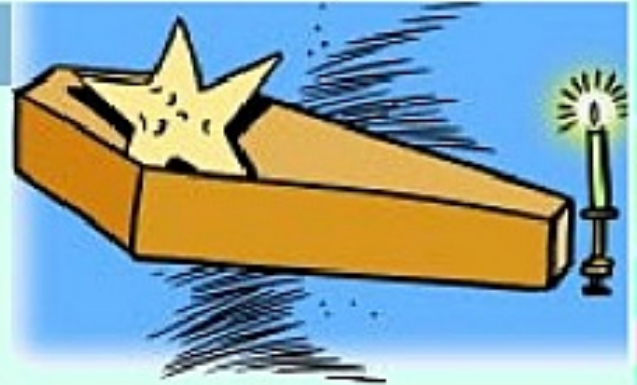
अपने भारत को जानो

सितम्बर से, भारत में पर्वों का सिलसिला आरम्भ हो जाता है। हम भी कुछेक पर्वों में ''भाग'' ले लें।

१. राजस्थान का सबसे लोकप्रिय त्योहार क्या है?

२. गुजरात के जूनागढ़ के निकट गिरनार में कौन-सा त्योहार मनाया जाता है? इसका महत्व क्या है?

३. कार्तिक पूर्णिमा के दिन किनका जन्म-दिन मनाया जाता है?

४. वे चार स्थान कौन-से हैं जहाँ बारह वर्षों में एक बार महाकुंभ मेला लगता है।

५. जनवरी में प.बंगाल में मनाये जानेवाले त्योहार का क्या नाम है?

(उत्तर ६६ पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

KALANIKETAN BALU

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

ललित जोशी
C/o. जोशी बुक डिपो
संजय नगर, बिन्दुखट्टा,
पोस्ट : लालकुंआ, जि. नैनी ताल,
पिन - २६२ ४०२ (उत्तरांचल).

विजयी प्रविष्टि

बेटा! तू तो है शेरों का यार।
और मैं एक मामूली कुम्हार॥

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तरः

१. तीज।
२. अर्जुन की तपस्या पूरी होने के बाद, श्रीकृष्ण द्वारा किये गये उसके स्वागत की स्मृति में भावनाथ मेला।
३. गुरु नानक।
४. हरद्वार, उज्जैन, प्रयाग, नासिक।
५. गंगासागर मेला।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

CHANDAMAMA (Hindi) september 2006
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08